WE HAVE CHANGED FROM SIKARIA GROUP TO

SAMPANN GROUP

sampann

TRUST • FUTURE • PROSPERITY

त्योहारों की हार्दिक शुभकामनाएं



Contact Us : +91 704 494 7777

www.sampanngroup.com | sales@sampanngroup.com

Follow us on

सत्यजीत रे की विरासत से डिजिटल सिनेमा तक : क्या टॉलीवुड फिर लिखेगा बंगाल की सुनहरी कहानी?



भारतीय सिनेमा के इतिहास में पश्चिम बंगाल का योगदान असाधारण रहा है। सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक और मृणाल सेन जैसे महान फिल्मकारों ने बंगाली सिनेमा को अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा दिलाई। उत्तम कुमार और सुचित्रा सेन की लोकप्रियता ने इसे जन-जन की भावनाओं से जोड़ा।

विश्व सिनेमा को नई पहचान देने वाला बंगाल आज बदलते दर्शकों, ओटीटी प्लेटफॉर्म, आधुनिक तकनीक और बढ़ती प्रतिस्पर्धा के दौर से गुजर रहा है। सिंगल-स्क्रीन सिनेमाघरों का संकट, सीमित निवेश और वितरण की चुनौतियों के बीच बेहतर फिल्म नीति, तकनीकी सुविधाएँ और केंद्र-राज्य का सहयोग टॉलीवुड को नई आर्थिक ऊँचाइयों तक पहुँचा सकता है। भारतीय सिनेमा के इतिहास में पश्चिम बंगाल का योगदान असाधारण रहा हैं। सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक और मृणाल सेन जैसे महान फिल्मकारों ने बंगाली सिनेमा को अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा दिलाई। उत्तम कुमार और सुचित्रा सेन की लोकप्रियता ने इसे जन-जन की भावनाओं से जोड़ा।

कोलकाता का टॉलीगंज आज भी बंगाली फिल्म एवं टेलीविजन उद्योग का प्रमुख केंद्र है। यही टॉलीवुड हजारों कलाकारों, तकनीशियनों और रचनात्मक पेशेवरों की आजीविका से जुड़ा हुआ है।

गौरवशाली विरासत, बदलते दौर की चुनौतियाँ

बंगाली सिनेमा की सबसे बड़ी शक्ति उसकी साहित्यिक परंपरा, संवेदनशील कहानियाँ और सामाजिक विषयों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने की क्षमता रही है। लेकिन वर्तमान दौर में बड़े बजट की हिंदी एवं दक्षिण भारतीय फिल्मों, बदलती दर्शक रुचियों और डिजिटल मनोरंजन के विस्तार ने क्षेत्रीय फिल्म उद्योग के सामने नई चुनौतियाँ खड़ी की हैं। फिल्म निर्माण की बढ़ती लागत, सीमित थिएटर शो, कमजोर वितरण नेटवर्क और निवेश की अनिश्चितता छोटे निर्माताओं के लिए विशेष चिंता का विषय हैं।

सिंगल-स्क्रीन सिनेमाघरों का संकट

फरवरी 2026 में कोलकाता के कुछ प्रतिष्ठित सिंगल-स्क्रीन सिनेमाघरों को पर्याप्त बंगाली फिल्में उपलब्ध नहीं होने और आर्थिक कठिनाइयों के कारण अस्थायी रूप से शो रोकने पड़े।

मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, राज्य में सिंगल-स्क्रीन सिनेमाघरों की संख्या कभी लगभग 700 थी, जो घटकर करीब 130 रह गई।

बंगाली फिल्मों के लिए प्रतिदिन प्राइम टाइम में कम-से-कम एक शो सुनिश्चित करने की नीति के बावजूद पर्याप्त दर्शक, गुणवत्तापूर्ण फिल्में और व्यावसायिक स्थिरता सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण चुनौती बनी हुई है।

ओटीटी, एआई और आधुनिक तकनीक से नए अवसर

ओटीटी प्लेटफॉर्म ने बंगाली फिल्मों और वेब सीरीज को राज्य की सीमाओं से बाहर नए दर्शकों तक पहुँचने का अवसर दिया है।

डिजिटल सिनेमैटोग्राफी, आधुनिक साउंड डिजाइन, विजुअल इफेक्ट्स, एनीमेशन और एआई आधारित तकनीक फिल्म निर्माण तथा पोस्ट-प्रोडक्शन में उपयोगी साबित हो सकती हैं।

हालाँकि एआई के उपयोग में कलाकारों की सहमति, कॉपीराइट, मौलिक रचनात्मकता और रोजगार सुरक्षा का ध्यान रखना भी आवश्यक है।

फिल्म स्टूडियो और तकनीकी प्रशिक्षण की शक्ति

पश्चिम बंगाल में नंदन फिल्म सेंटर, टेक्नीशियंस स्टूडियो और रूपकला केंद्र जैसी संस्थाएँ फिल्म संस्कृति एवं तकनीकी विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। राज्य सरकार के अनुसार, आधुनिकीकृत टेक्नीशियंस स्टूडियो में चार वातानुकूलित और दो गैर-वातानुकूलित शूटिंग फ्लोर उपलब्ध हैं।

केंद्र सरकार द्वारा 1995 में स्थापित कोलकाता का सत्यजीत रे फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान निर्देशन, सिनेमैटोग्राफी, संपादन, साउंड डिजाइन और डिजिटल मीडिया में पेशेवर प्रशिक्षण प्रदान करता है।

इन संस्थानों को नई तकनीक और उद्योग की आवश्यकताओं से जोड़कर युवा प्रतिभाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़ाए जा सकते हैं।

फिल्म पर्यटन से बढ़ेगी बंगाल की अर्थव्यवस्था

दार्जिलिंग की पहाड़ियाँ, सुंदरबन, शांतिनिकेतन, मुर्शिदाबाद के ऐतिहासिक स्थल और कोलकाता की विरासत फिल्म निर्माण के लिए आकर्षक स्थान हैं। सरल शूटिंग अनुमति, बेहतर स्टूडियो सुविधाएँ, फिल्म पर्यटन को प्रोत्साहन और स्थानीय तकनीशियनों की भागीदारी से होटल, परिवहन, पर्यटन तथा सेवा क्षेत्र को भी आर्थिक लाभ मिल सकता है।

नई फिल्म नीति से टॉलीवुड को नई उड़ान

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार की रचनात्मक अर्थव्यवस्था और डिजिटल मीडिया संबंधी पहलों को पश्चिम बंगाल की फिल्म विकास योजनाओं से जोड़कर उद्योग को नई दिशा दी जा सकती है।

इसके लिए पारदर्शी फिल्म प्रोत्साहन नीति, सिंगल-स्क्रीन सिनेमाघरों का आधुनिकीकरण, छोटे निर्माताओं को सहायता, कलाकारों एवं तकनीशियनों की सामाजिक सुरक्षा तथा अंतरराष्ट्रीय फिल्म बाजारों तक पहुँच महत्वपूर्ण होगी।

'BENGAL RISING' का सांस्कृतिक भविष्य तभी मजबूत होगा, जब टॉलीवुड अपनी महान विरासत को आधुनिक तकनीक, मौलिक कहानियों और व्यावसायिक अवसरों के साथ जोड़ सकेगा।

क्योंकि बंगाल का सिनेमा केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि उसकी भाषा, साहित्य, संस्कृति, रचनात्मक प्रतिभा और आर्थिक संभावनाओं का जीवंत प्रतिबिंब है।

नई सोच, नई तकनीक और नई कहानियाँ-यही लिखेंगी टॉलीवुड के पुनरुत्थान की नई पटकथा!

SHRI SHIKSHAYATAN SCHOOL

(a unit of Shikshayatan Foundation)

LORD SINHA ROAD, KOLKATA - 700 071

CBSE - AFFILIATION NO. - 2430151

350 m from Rabindra Sadan metro station / Exide Crossing

A Joyful Start to a Lifetime of Learning

ADMISSIONS OPEN FOR

NURSERY (2+) TO CLASS V

SESSION 2027 - 2028



- Located at a prime location in South Kolkata at the hub of all major transport routes.
- Safe and secure campus with CCTV surveillance
- Air-conditioned, child-friendly classrooms
- Well-Resourced Digital & Physical Library
- State-of-the-art laboratories for experiential learning
- Safe & Child-Friendly Play Area
- Well-equipped infirmary for comprehensive student care
- Professionally trained, caring, experienced and dedicated faculty
- Innovative and Inter-disciplinary teaching approaches
- Interactive Digital Panels for an engaging learning experience
- Activity-based learning through engaging educational games
- Inclusive Education, Contact Classes and facilities for CWSN
- Language Classes: French, German and Mandarin
- Diverse range of Club Classes: Public speaking & Debate, Quiz, Robotics, Science & Eco club, Culture and Heritage
- Wide range of sports facilities including Table Tennis and Karate
- Nurturing Beyond Academics-Special Activity Classes : Aerobics, Chess, Synthesizer, Ballet, Guitar, Drama
- Enriching the social, emotional and cognitive development of every child
- Consistent, Meaningful & Collaborative Parent-Teacher Engagement

ADMISSIONS OPEN FOR NURSERY(2+) TO CLASS IX & XI

Scan to know your School

info@shrishikshayatanschool.com

www.shrishikshayatanschool.com

(033) 2282-6350 / (033) 2282-0346 / (+91) 8100975564

https://www.facebook.com/profile.php?id=61583459191338

https://www.instagram.com/shrishikshayatan_school/

ईडन की गर्जना से विश्व क्रिकेट तक:
बंगाल की रगों में दौड़ता है क्रिकेट का जुनून!

कोलकाता की सुबह हो या शाम, गली का मैदान हो या ईडन गार्डन्स का विशाल स्टेडियम– क्रिकेट बंगाल के जनजीवन में विशेष स्थान रखता है। यहाँ चौके–छक्कों की गूँज केवल खेल का रोमांच नहीं, बल्कि लाखों लोगों की उम्मीदों और भावनाओं की अभिव्यक्ति है।

सौरव गांगुली की ऐतिहासिक कप्तानी, ईडन गार्डन्स की गौरवशाली विरासत, कोलकाता नाइट राइडर्स के तीन आईपीएल खिताब और रणजी ट्रॉफी में बंगाल का संघर्ष–क्रिकेट केवल खेल नहीं, बल्कि बंगाल की भावनाओं, पहचान और आर्थिक संभावनाओं का महत्वपूर्ण हिस्सा है। अब चुनौती इस विरासत को नई प्रतिभाओं, आधुनिक अकादमियों और विश्वस्तरीय खेल सुविधाओं के सहारे नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने की है। कोलकाता की सुबह हो या शाम, गली का मैदान हो या ईडन गार्डन्स का विशाल स्टेडियम– क्रिकेट बंगाल के जनजीवन में विशेष स्थान रखता है। यहाँ चौके–छक्कों की गूँज केवल खेल का रोमांच नहीं, बल्कि लाखों लोगों की उम्मीदों और भावनाओं की अभिव्यक्ति है।



ईडन गार्डन्स: जहाँ इतिहास बोलता है

भारतीय क्रिकेट का ऐतिहासिक केंद्र ईडन गार्डन्स वर्ष 1934 से अंतरराष्ट्रीय टेस्ट क्रिकेट का साक्षी रहा है। यहीं 2001 में भारत ने ऑस्ट्रेलिया के विरुद्ध फॉलोऑन खेलने के बाद ऐतिहासिक टेस्ट जीत दर्ज की थी। वीवीएस लक्ष्मण की 281 रन की पारी और राहुल द्रविड़ के साथ उनकी यादगार साझेदारी आज भी भारतीय क्रिकेट की महान उपलब्धियों में गिनी जाती है।

ईडन गार्डन्स ने 1987 के क्रिकेट विश्व कप फाइनल और 2016 के टी20 विश्व कप फाइनल जैसे प्रतिष्ठित मुकाबलों की मेजबानी भी की है।

सौरव गांगुली: बंगाल से भारतीय क्रिकेट को नई दिशा भारतीय क्रिकेट में बंगाल के योगदान की चर्चा सौरव गांगुली के बिना अधूरी है। 1996 में लॉर्ड्स में टेस्ट पदार्पण पर शतक लगाने वाले गांगुली ने भारतीय कप्तान के रूप में टीम को नया आत्मविश्वास दिया। उनके नेतृत्व में भारत 2003 के एकदिवसीय विश्व कप के फाइनल तक पहुँचा।

पंकज रॉय से लेकर गांगुली और वर्तमान दौर के मोहम्मद शमी, मुकेश कुमार, आकाश दीप तथा ऋचा घोष तक, बंगाल से जुड़े खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय क्रिकेट में अपनी महत्वपूर्ण पहचान बनाई है।

केकेआर के तीन खिताब, कोलकाता का गौरव

कोलकाता नाइट राइडर्स ने 2012, 2014 और 2024 में इंडियन प्रीमियर लीग का खिताब जीतकर शहर को तीन बार चैंपियन बनने का गौरव दिलाया।

आईपीएल ने क्रिकेट को खेल मनोरंजन, विज्ञापन, प्रसारण और खेल व्यवसाय से जोड़कर आर्थिक अवसरों का विस्तार किया है। हालाँकि फ्रैंचाइज़ी की सफलता के साथ स्थानीय क्रिकेट प्रतिभाओं को अधिक अवसर और प्रशिक्षण उपलब्ध कराना भी महत्वपूर्ण है।

रणजी ट्रॉफी: उपलब्धियों के साथ अधूरा सपना

बंगाल ने 1938–39 और 1989–90 में रणजी ट्रॉफी जीती थी। इसके बाद राज्य की टीम कई बार खिताब के करीब पहुँची, लेकिन तीसरी सफलता का इंतजार जारी है। 2025–26 के रणजी सत्र में बंगाल ने क्वार्टर फाइनल में आंध्र को पारी और 90 रन से हराकर सेमीफाइनल में प्रवेश किया। हालाँकि जम्मू–कश्मीर के विरुद्ध छह विकेट की हार से उसका अभियान समाप्त हो गया। यह प्रदर्शन राज्य की प्रतिभा और प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता के साथ घरेलू क्रिकेट में निरंतरता की आवश्यकता भी दर्शाता है।

महिला क्रिकेट और ग्रामीण प्रतिभाओं का भविष्य

सिलीगुड़ी से उभरी भारतीय विकेटकीपर–बल्लेबाज ऋचा घोष बंगाल की युवा महिला क्रिकेटरों के लिए प्रेरणा हैं। महिला क्रिकेट में प्रशिक्षण, प्रतियोगिताओं, सुरक्षित सुविधाओं और पेशेवर अवसरों का विस्तार नई पीढ़ी को आगे बढ़ा सकता है।

इसी प्रकार उत्तर बंगाल, जंगलमहल, सुंदरबन और ग्रामीण जिलों में गुणवत्तापूर्ण क्रिकेट अकादमियाँ, प्रशिक्षित कोच तथा प्रतिभा पहचान कार्यक्रम आवश्यक हैं।

क्रिकेट से रोजगार और अर्थव्यवस्था को नई शक्ति

अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों और आईपीएल आयोजनों से होटल, परिवहन, पर्यटन, खानपान, प्रसारण और स्थानीय कारोबार को अवसर मिलते हैं।

क्रिकेट एसोसिएशन ऑफ बंगाल की स्थापना 1928 में हुई थी। आज यह संस्था राज्य में घरेलू क्रिकेट, प्रतियोगिताओं और प्रतिभा विकास की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभाती है। आधुनिक प्रशिक्षण केंद्र, खेल विज्ञान, पारदर्शी चयन प्रक्रिया और जिला क्रिकेट के विस्तार से बंगाल की क्रिकेट व्यवस्था को और मजबूत बनाया जा सकता है।

हर जिले से निकले अगला चैंपियन!

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खेलो इंडिया विजन और केंद्र–राज्य के प्रभावी सहयोग से बंगाल में क्रिकेट सहित विभिन्न खेलों के लिए आधुनिक सुविधाओं का विस्तार संभव है।

'BENG-L RISING' का क्रिकेट सपना केवल ईडन गार्डन्स की तालियों या आईपीएल की ट्रॉफियों तक सीमित नहीं रहना चाहिए। इसका वास्तविक लक्ष्य हर प्रतिभाशाली बच्चे को आगे बढ़ने का अवसर देना होना चाहिए।

OVER 33 YEARS OF TRUST

Ankur™

IODISED SALT

Asli Namak





नमक कम ही खाएँ
पर अच्छा खाएँ...

Ankur Salt Pvt. Ltd. Call : +91 94330 14162

विद्यासागर की धरती से प्रतिभाओं का पलायन

आखिर क्यों बंगाल छोड़ रहे हैं शिक्षित युवा?



प्राथमिक शिक्षा में बढ़ती चुनौतियाँ, माध्यमिक स्तर पर 20 प्रतिशत ड्रॉपआउट, उच्च शिक्षा की गुणवत्ता और रोजगार के सीमित अवसर-बंगाल की गौरवशाली शैक्षणिक विरासत के सामने आज गंभीर सवाल खड़े हैं। क्या शिक्षा, उद्योग और रोजगार के बीच मजबूत संबंध स्थापित कर बंगाल अपनी प्रतिभाओं को रोक पाएगा और बाहर जा चुके युवाओं को वापस आकर्षित कर सकेगा?

जिस बंगाल ने ईश्वरचंद्र विद्यासागर, रवींद्रनाथ टैगोर, जगदीशचंद्र बोस और सत्येंद्रनाथ बोस जैसी महान विभूतियाँ दीं, वही बंगाल आज अपनी युवा प्रतिभाओं के भविष्य को लेकर एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है। कोलकाता विश्वविद्यालय, जादवपुर विश्वविद्यालय, आईआईटी खड़गपुर और इंडियन स्टैटिस्टिकल इंस्टीट्यूट जैसे प्रतिष्ठित संस्थान राज्य की बौद्धिक शक्ति के प्रतीक हैं। इसके बावजूद गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, अनुसंधान और बेहतर करियर के लिए अनेक विद्यार्थी तथा पेशेवर दूसरे राज्यों और विदेशों का रुख करते हैं।

प्राथमिक शिक्षा से ही मजबूत करनी होगी नींव

शिक्षा की वास्तविक गुणवत्ता केवल विद्यालयों में नामांकन से नहीं, बल्कि बच्चों की पढ़ने, लिखने, गणना करने और समझने की क्षमता से निर्धारित होती है। सरकारी विद्यालयों में पर्याप्त शिक्षक, आधुनिक कक्षाएँ, डिजिटल सुविधाएँ और नियमित शैक्षणिक

> जिस बंगाल ने ईश्वरचंद्र विद्यासागर, रवींद्रनाथ टैगोर, जगदीशचंद्र बोस और सत्येंद्रनाथ बोस जैसी महान विभूतियाँ दीं, वही बंगाल आज अपनी युवा प्रतिभाओं के भविष्य को लेकर एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है।

मूल्यांकन आवश्यक हैं।

ग्रामीण एवं आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना राज्य की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल होना चाहिए।

माध्यमिक शिक्षा में 20 प्रतिशत ड्रॉपआउट की चिंता केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय की एऊख्ख्ए+ 2024-25 रिपोर्ट के अनुसार, पश्चिम बंगाल में माध्यमिक स्तर पर विद्यालय छोड़ने की दर 20 प्रतिशत दर्ज हुई, जबकि राष्ट्रीय औसत 11.5 प्रतिशत था।

प्राथमिक स्तर पर राज्य की ड्रॉपआउट दर 1.4 प्रतिशत और उच्च प्राथमिक स्तर पर 3 प्रतिशत रही। ये आँकड़े संकेत देते हैं कि विशेष रूप से माध्यमिक शिक्षा में विद्यार्थियों को पढ़ाई से जोड़े रखने के लिए प्रभावी प्रयासों की आवश्यकता है।

आर्थिक दबाव, शैक्षणिक कठिनाइयों, पारिवारिक परिस्थितियों और रोजगार संबंधी आवश्यकताओं जैसे संभावित कारणों का स्थानीय स्तर पर अध्ययन कर समाधान विकसित करना होगा।

उच्च शिक्षा में प्रतिष्ठा के साथ प्रतिस्पर्धा की चुनौती AISHE 2021-22 के अनुसार, पश्चिम बंगाल में उच्च शिक्षा में लगभग 27.22 लाख विद्यार्थी नामांकित थे।

लेकिन विद्यार्थियों की संख्या के साथ शिक्षण गुणवत्ता, अनुसंधान सुविधाएँ, नियमित शैक्षणिक सत्र, उद्योगों से साझेदारी और रोजगारपरक पाठ्यक्रम भी महत्वपूर्ण हैं।

विश्वविद्यालयों में आधुनिक प्रयोगशालाएँ, अंतरराष्ट्रीय शोध सहयोग और पारदर्शी नियुक्ति प्रक्रियाएँ उच्च शिक्षा की विश्वसनीयता तथा प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता को मजबूत कर सकती हैं।

ब्रेन ड्रेन: प्रतिभा बंगाल की, अवसर दूसरे राज्यों में!

बेंगलुरु, हैदराबाद, पुणे, मुंबई और दिल्ली-एनसीआर जैसे प्रमुख आर्थिक केंद्र बेहतर करियर की तलाश करने वाले अनेक पेशेवरों को आकर्षित करते हैं।

आईटी, इंजीनियरिंग, वित्त, अनुसंधान और कॉर्पोरेट सेवाओं में स्थानीय स्तर पर पर्याप्त उच्च गुणवत्ता वाले अवसर विकसित करना बंगाल के लिए महत्वपूर्ण चुनौती है।

हालाँकि राज्य से बाहर जाने वाले उच्च शिक्षित युवाओं की वर्तमान कुल संख्या का कोई व्यापक और विश्वसनीय सार्वजनिक अनुमान उपलब्ध नहीं है। इसलिए प्रत्येक प्रवासी विद्यार्थी या पेशेवर को स्थायी प्रतिभा पलायन का हिस्सा मानना उचित नहीं होगा।

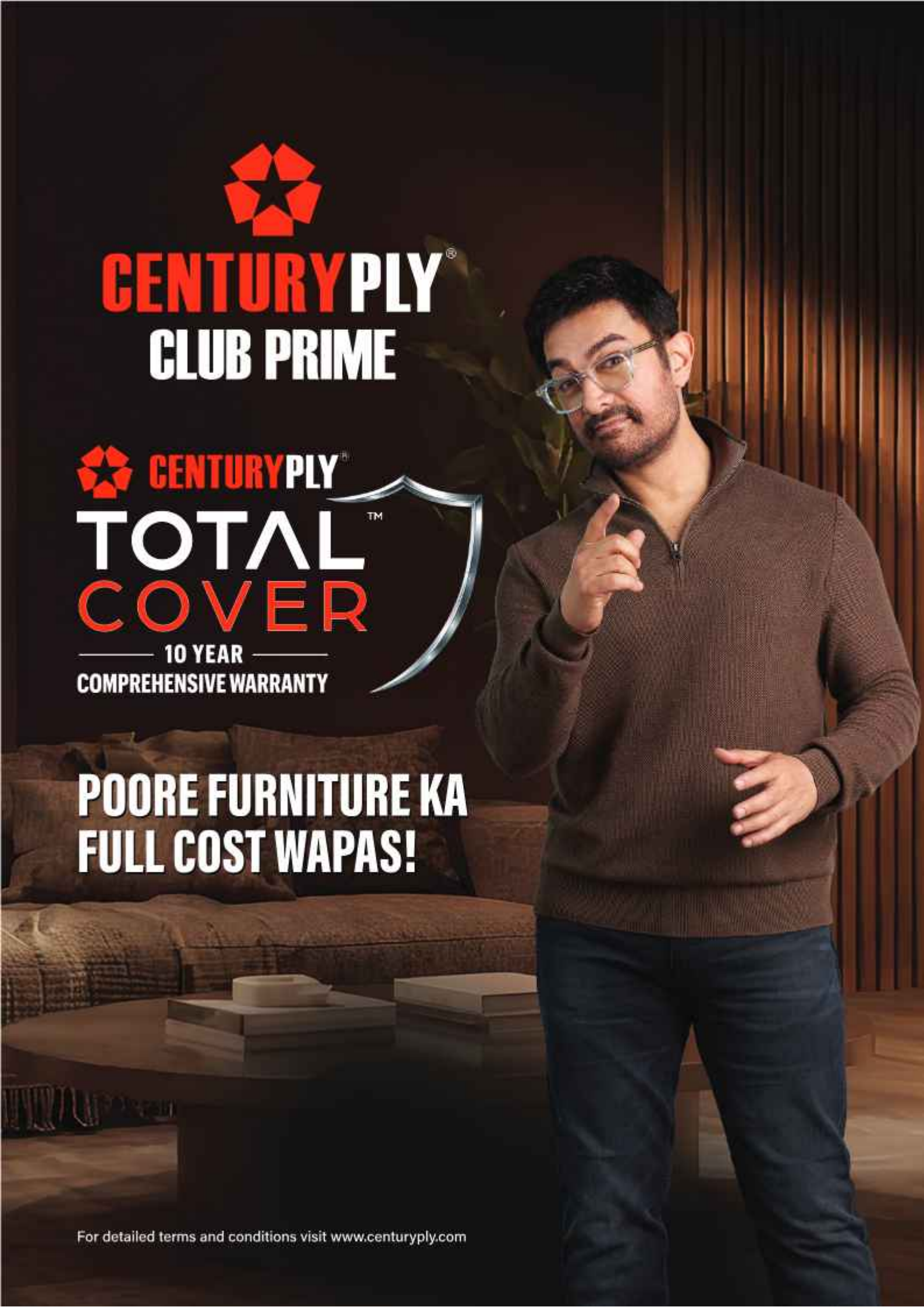
रोजगार की तलाश में पलायन का वास्तविक संकेत 2026 में प्रकाशित पांशकुड़ा क्षेत्र के 7,500 से अधिक प्रवासी परिवारों एवं लौटे हुए प्रवासियों पर आधारित एक अध्ययन में 62.87 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बेहतर रोजगार को पलायन का प्रमुख कारण बताया, जबकि 9.5 प्रतिशत ने शिक्षा को कारण बताया। यह अध्ययन पूरे पश्चिम बंगाल का प्रतिनिधित्व नहीं करता, लेकिन स्थानीय रोजगार और शिक्षा संबंधी चुनौतियों की गंभीरता को सामने लाता है।

डबल इंजन से शिक्षा और रोजगार को नई दिशा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'विकसित भारत 2047' विजन के अनुरूप केंद्र और राज्य के प्रभावी समन्वय से शिक्षा, कौशल विकास, अनुसंधान तथा औद्योगिक निवेश को जोड़ने की व्यापक संभावनाएँ हैं। आईटी, एआई, स्वास्थ्य, विनिर्माण और स्टार्टअप क्षेत्रों में नए रोजगार, विश्वविद्यालय-उद्योग साझेदारी तथा शोध आधारित उद्यमिता प्रतिभाओं को बंगाल में अवसर प्रदान कर सकती हैं।

बंगाल को चाहिए ब्रेन ड्रेन नहीं, ब्रेन गेन!

बंगाल की सबसे बड़ी आवश्यकता ऐसी व्यवस्था विकसित करने की है, जहाँ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के बाद युवाओं को सम्मानजनक रोजगार और करियर में प्रगति के अवसर मिलें।


CENTURYPLY®
CLUB PRIME
CENTURYPLY®
TOTAL™
COVER
10 YEAR
COMPREHENSIVE WARRANTY
POORE FURNITURE KA
FULL COST WAPAS!
For detailed terms and conditions visit www.centuryply.com

हिमालय से सुंदर वन, गंगा से सागर तक :

पर्यटन की नई उड़ान से चमकेगा बंगाल!



दार्जिलिंग की वादियाँ, सुंदरबन का रोमांच, दीघा का समुद्र, मायापुर की आध्यात्मिक विरासत और कोलकाता की ऐतिहासिक धरोहर-प्रकृति, संस्कृति और आस्था का अनूठा संगम पश्चिम बंगाल को विश्वस्तरीय पर्यटन केंद्र बनाने की क्षमता रखता है। आधुनिक कनेक्टिविटी, बेहतर सुविधाओं और केंद्र-राज्य के प्रभावी समन्वय से पर्यटन राज्य की अर्थव्यवस्था और रोजगार का बड़ा आधार बन सकता है।

भारत के पर्यटन मानचित्र पर पश्चिम बंगाल का स्थान विशिष्ट है। देश के उन चुनिंदा राज्यों में बंगाल शामिल है, जहाँ हिमालय की बर्फीली चोटियों से लेकर बंगाल की खाड़ी के समुद्री तटों तक प्राकृतिक विविधता देखने को मिलती है।

दार्जिलिंग, कालिम्पोंग और डुआर्स की हरियाली, सुंदरबन के मैंग्रोव वन, दीघा-मंदारमणि के समुद्र तट तथा कोलकाता की ऐतिहासिक इमारतें राज्य को पर्यटन की अपार संभावनाएँ प्रदान करती हैं।

दार्जिलिंग से सुंदरबन: प्रकृति का अनमोल खजाना

दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे को 1999 में यूनेस्को विश्व धरोहर का दर्जा मिला था। यह ऐतिहासिक टॉय ट्रेन बंगाल के पर्वतीय पर्यटन की विश्वप्रसिद्ध पहचान है। सुंदरबन राष्ट्रीय उद्यान 1987 से यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है। यहाँ के मैंग्रोव वन और रॉयल बंगाल टाइगर पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र हैं।

पर्यावरण संरक्षण, नियंत्रित पर्यटन और स्थानीय समुदायों की भागीदारी से इन क्षेत्रों में स्थायी पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सकता है।

धार्मिक पर्यटन: आस्था के साथ आर्थिक अवसर

दक्षिणेश्वर काली मंदिर, कालीघाट, तारापीठ, मायापुर, बेलूर मठ और गंगासागर बंगाल के प्रमुख धार्मिक पर्यटन केंद्र हैं।

इन स्थलों पर आने वाले श्रद्धालुओं से परिवहन, होटल, भोजनालय, स्थानीय व्यापार और अन्य सेवाओं को आर्थिक अवसर मिलते हैं।

स्वच्छता, यात्री सुरक्षा, बेहतर आवास, डिजिटल सूचना और सुगम परिवहन से धार्मिक पर्यटन को अधिक व्यवस्थित बनाया जा सकता है।

विश्व धरोहर से सांस्कृतिक पर्यटन को नई पहचान

शांतिनिकेतन को सितंबर 2023 में यूनेस्को विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया था। रवींद्रनाथ टैगोर की शैक्षणिक और सांस्कृतिक विरासत इसे अंतरराष्ट्रीय पहचान प्रदान करती है। कोलकाता की दुर्गापूजा को दिसंबर 2021 में यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची में स्थान मिला।

विक्टोरिया मेमोरियल, भारतीय संग्रहालय, मुर्शिदाबाद का हजारदुआरी महल और बिष्णुपुर के ऐतिहासिक मंदिर सांस्कृतिक पर्यटन की महत्वपूर्ण धरोहर हैं। इनके संरक्षण के साथ आधुनिक पर्यटन सुविधाओं का विकास आवश्यक है।

विदेशी पर्यटकों के लिए बंगाल का आकर्षण

केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय के आँकड़ों के अनुसार, वर्ष 2024 में पश्चिम बंगाल में लगभग 31.24 लाख विदेशी पर्यटक यात्राएँ दर्ज की गई थीं।

इस आधार पर राज्य विदेशी पर्यटक यात्राओं की संख्या में देश के अग्रणी राज्यों में शामिल रहा।

हालाँकि यह संख्या अलग-अलग व्यक्तियों की नहीं, बल्कि दर्ज की गई पर्यटक यात्राओं की है।

अंतरराष्ट्रीय पर्यटन को और मजबूत बनाने के लिए बेहतर हवाई संपर्क, बहुभाषी सुविधाएँ, पर्यटन प्रचार और गुणवत्तापूर्ण सेवाओं का विस्तार महत्वपूर्ण होगा।

होटल, होमस्टे और ग्रामीण पर्यटन से रोजगार

पर्यटन केवल दर्शनीय स्थलों तक सीमित नहीं है। इससे होटल, होमस्टे, रेस्तराँ, परिवहन, हस्तशिल्प, स्थानीय गाइड और छोटे व्यापारियों की आजीविका जुड़ी होती है। उत्तर बंगाल के चाय बागान, ग्रामीण बंगाल की लोकसंस्कृति, पारंपरिक भोजन और हस्तशिल्प को पर्यटन से जोड़कर स्थानीय अर्थव्यवस्था मजबूत की जा सकती है। महिलाओं और युवाओं के लिए आतिथ्य सेवाओं, डिजिटल बुकिंग, टूर संचालन और पर्यटन उद्यमिता में नए अवसर विकसित हो सकते हैं।

डबल इंजन से पर्यटन को नई रफ्तार

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'विकसित भारत 2047' विजन और केंद्र-राज्य के प्रभावी समन्वय से पश्चिम बंगाल में पर्यटन अवसंरचना, सड़क एवं रेल संपर्क तथा अंतरराष्ट्रीय प्रचार को गति मिल सकती है।

केंद्र की स्वदेश दर्शन और प्रसाद जैसी योजनाओं के साथ राज्य की पर्यटन प्राथमिकताओं को जोड़कर स्थलों के विकास, पर्यटक सुविधाओं और स्थानीय रोजगार को प्रोत्साहन दिया जा सकता है।

इसके लिए पारदर्शी निवेश नीति, पर्यावरण संरक्षण, सुरक्षा और समयबद्ध परियोजना क्रियान्वयन आवश्यक होंगे।

पर्यटन बनेगा समृद्ध बंगाल का नया आधार

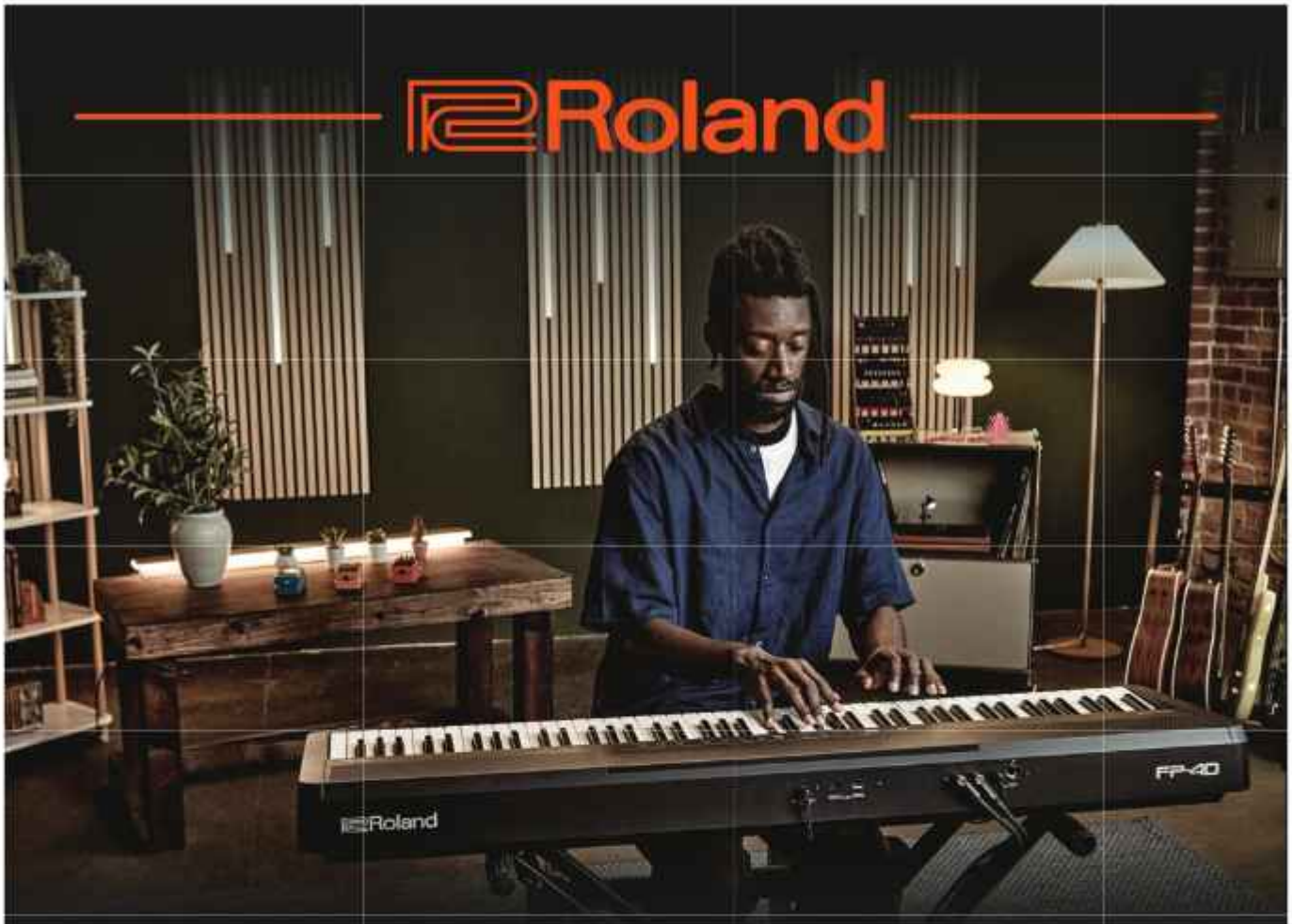
बंगाल की सबसे बड़ी शक्ति उसकी विविधता है। यहाँ प्रकृति, आस्था, इतिहास, कला, संस्कृति और खानपान मिलकर पर्यटन का अनूठा अनुभव प्रदान करते हैं।

"BENGAL RISING' का पर्यटन सपना तभी साकार होगा, जब विश्वस्तरीय सुविधाओं के साथ स्थानीय समुदायों की आय, रोजगार और सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण भी सुनिश्चित होगा।

क्योंकि बंगाल केवल घूमने की जगह नहीं, बल्कि प्रकृति को महसूस करने, इतिहास को समझने और संस्कृति को जीने का अद्भुत अनुभव है।

हिमालय की ऊँचाइयों से सागर की लहरों तक-अब दुनिया देखेगी नए बंगाल की नई पहचान!

Roland



PLAY. DISCOVER. PROGRESS.



INTRODUCING

FP-40

WITH PIANO SPHERE

FP-40 KEY FEATURES

PIANO REALITY Sound Engine	**PHA-4 STANDARD** 88 weighted keys	**256-NOTE** Max. polyphony
24 W TOTAL 12 W x 2 speakers	**305 TONES** 40 direct + 265 app	**WI-FI + BLUETOOTH** USB-C connectivity

For more details contact: 033-22

विकास की नई सड़कें, समृद्धि की नई मंजिलें:

बंगाल में हाईवे क्रांति का नया अध्याय!

16,990 करोड़ की राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाएँ, 231 किलोमीटर का खड़गपुर-मोग्राम आर्थिक कॉरिडोर और ग्रामीण सड़कों का विस्तार-पश्चिम बंगाल में सड़क अवसंरचना के आधुनिकीकरण की नई संभावनाएँ उभर रही हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र की विकास योजनाओं और राज्य सरकार के समन्वय से बेहतर कनेक्टिविटी, औद्योगिक निवेश तथा रोजगार को नई गति मिल सकती है।

किसी भी प्रदेश की आर्थिक समृद्धि का रास्ता उसकी मजबूत सड़कों से होकर गुजरता है। आधुनिक राजमार्ग केवल शहरों को नहीं जोड़ते, बल्कि किसानों को बाजार, उद्योगों को परिवहन सुविधाएँ और युवाओं को रोजगार के नए अवसर प्रदान करते हैं। पूर्वी भारत का महत्वपूर्ण व्यापारिक प्रवेश द्वार पश्चिम बंगाल आज राष्ट्रीय राजमार्गों, औद्योगिक कॉरिडोर, ग्रामीण संपर्क मार्गों और आधुनिक यातायात सुविधाओं के विस्तार के एक महत्वपूर्ण दौर से गुजर रहा है।

राष्ट्रीय राजमार्गों को नई गति

मार्च 2026 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पश्चिम बंगाल में सड़क अवसंरचना से जुड़ी कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं का उद्घाटन एवं शिलान्यास किया। केंद्र सरकार के अनुसार, लगभग 16,990 करोड़ की लागत वाली 420 किलोमीटर से अधिक लंबाई की राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं को इस कार्यक्रम में शामिल किया गया। इनमें कुछ परियोजनाओं का उद्घाटन हुआ, जबकि अन्य का शिलान्यास किया गया। इनका उद्देश्य यात्रा समय घटाना, सड़क सुरक्षा बढ़ाना और क्षेत्रीय व्यापार को मजबूत करना है।

खड़गपुर-मोग्राम कॉरिडोर : उद्योगों के लिए नया रास्ता

231 किलोमीटर लंबा चार लेन वाला खड़गपुर-मोग्राम आर्थिक कॉरिडोर बंगाल की महत्वपूर्ण प्रस्तावित सड़क परियोजनाओं में शामिल है।

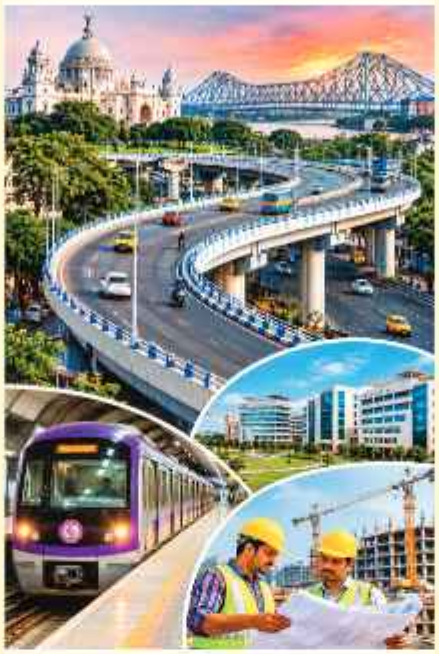
राष्ट्रीय राजमार्ग-116- का यह हिस्सा पश्चिम मेदिनीपुर, बांकुड़ा, हुगली, पूर्व बर्धमान, बीरभूम और मुर्शिदाबाद जिलों से होकर गुजरेगा।

केंद्र सरकार के अनुमान के अनुसार, परियोजना पूरी होने पर संबंधित मार्ग की दूरी लगभग 120 किलोमीटर कम हो सकती है तथा यात्रा समय में सात से आठ घंटे तक की बचत संभव है।

यह कॉरिडोर औद्योगिक क्षेत्रों, माल परिवहन और उत्तर-दक्षिण बंगाल की कनेक्टिविटी को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

राज्य की सड़कों और पुलों में निवेश

पश्चिम बंगाल सरकार के 2026-27 के बजट दस्तावेज के अनुसार, संबंधित वित्त वर्ष के दौरान 2,071.62 करोड़ की लागत से 86 सड़क परियोजनाओं के अंतर्गत 849 किलोमीटर सड़कों में सुधार, 16 पुलों और एक रेलवे ओवरब्रिज का निर्माण पूरा किया गया। इसके अतिरिक्त, 19 पुराने पुलों का पुनर्वास और पाँच सड़क सुरक्षा परियोजनाएँ भी पूरी की गईं। पूर्व मेदिनीपुर की कांथी-बेलदा सड़क तथा मुर्शिदाबाद की कई महत्वपूर्ण सड़कों के चौड़ीकरण और सुदृढ़ीकरण से क्षेत्रीय संपर्क को बेहतर बनाने के प्रयास हुए हैं।



प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'विकसित भारत 2047' विजन और केंद्र-राज्य के प्रभावी समन्वय से बंगाल की सड़क परियोजनाओं को नई गति मिल सकती है। समयबद्ध निर्माण, भूमि संबंधी समस्याओं का समाधान, पारदर्शी निगरानी और आधुनिक तकनीक का उपयोग निवेश तथा औद्योगिक विकास के लिए महत्वपूर्ण होंगे।

उत्तर बंगाल से सुंदरबन तक कनेक्टिविटी की चुनौती

उत्तर बंगाल में पर्वतीय सड़कों पर भूस्खलन, भारी वर्षा और यातायात बाधाएँ बड़ी चुनौतियाँ हैं। राष्ट्रीय राजमार्ग-10 पर ढलान संरक्षण, सड़क चौड़ीकरण और जल निकासी सुधार संबंधी परियोजनाएँ संचालित हैं।

दूसरी ओर, सुंदरबन, जंगलमहल और दूरदराज के ग्रामीण क्षेत्रों में मजबूत सड़कें शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं, कृषि बाजार और पर्यटन तक पहुँच बढ़ाने का महत्वपूर्ण माध्यम हैं।

कोलकाता को चाहिए आधुनिक ट्रैफिक व्यवस्था

कोलकाता और आसपास के शहरी क्षेत्रों में यातायात जाम, सीमित सड़क क्षमता, पार्किंग, जलभराव और सड़क सुरक्षा जैसी समस्याएँ नागरिकों के दैनिक जीवन को प्रभावित करती हैं।

स्मार्ट ट्रैफिक प्रबंधन, बेहतर सार्वजनिक परिवहन, व्यवस्थित पार्किंग, पैदल यात्रियों की सुरक्षा और वैज्ञानिक सड़क रखरखाव से महानगरीय यातायात को अधिक सुविधाजनक बनाया जा सकता है।

सड़क सुरक्षा और गुणवत्ता सर्वोच्च प्राथमिकता

जून 2026 में केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने पश्चिम बंगाल में 3,748 किलोमीटर राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं की गुणवत्ता और रखरखाव संबंधी प्रगति की समीक्षा की।

इस दौरान सड़क निर्माण की गुणवत्ता, जल निकासी, दुर्घटना संभावित स्थानों में सुधार और मानसून की तैयारियों पर विशेष जोर दिया गया।

सड़क विकास की वास्तविक सफलता केवल किलोमीटर बढ़ाने में नहीं, बल्कि टिकाऊ निर्माण, सुरक्षित यात्रा और नियमित रखरखाव में है।

डबल इंजन से विकास को मिलेगी नई रफ्तार

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'विकसित भारत 2047' विजन और केंद्र-राज्य के प्रभावी समन्वय से बंगाल की सड़क परियोजनाओं को नई गति मिल सकती है। समयबद्ध निर्माण, भूमि संबंधी समस्याओं का समाधान, पारदर्शी निगरानी और आधुनिक तकनीक का उपयोग निवेश तथा औद्योगिक विकास के लिए महत्वपूर्ण होंगे।

'BENGAL RISING' का वास्तविक सपना तभी साकार होगा, जब कोलकाता से कूचबिहार, खड़गपुर से मुर्शिदाबाद और दार्जिलिंग से सुंदरबन तक सुरक्षित, मजबूत और आधुनिक सड़क संपर्क उपलब्ध होगा। क्योंकि सड़कें केवल दूरियाँ नहीं घटातीं-वे विकास के अवसरों को हर गाँव, हर शहर और हर परिवार तक पहुँचाती हैं।

SETHI®

Sethi Group of Diagnostic Centres

Celebrating 37 Years of Exceptional Service

The Chemist Corner

CHEMIST & DRUGGIST

(Behala Balananda Brahmachari Hospital)

128/N, Diamond Harbour Road, Kolkata - 700034, Ph. : 78900 10600

Serving Since 1989

Sethi Health Institute

Paramedical Education • Self-Employment Program • Empowering Futures

5/1, Pasupati Bhattacharjee Road, Kolkata - 34, Phone : 9830022075, 9830662930

Sethi Diagnostic & Medicare Pvt. Ltd.

1D, Diamond Harbour Road (Behala Tram Depot), Kolkata - 700034

Phone : (033) 2396 9986, 2396 9987, 78900 10400, 78900 10800

Trusted Since 1993

31 Years of Dedication to Health and Well-being

पहाड़ों की पुकार, पहचान का सवाल: क्या 2026 में मिलेगा गोरखालैंड विवाद का स्थायी समाधान?



दार्जिलिंग की विश्वप्रसिद्ध चाय, हिमालय की पर्यटन संपदा और गोरखा समुदाय की विशिष्ट पहचान के बीच दशकों पुरानी गोरखालैंड की माँग एक बार फिर राजनीतिक चर्चा के केंद्र में है। अगस्त 2026 की त्रिपक्षीय वार्ता और अक्टूबर में तेज हुई बातचीत ने संवैधानिक समाधान की उम्मीदें बढ़ाई हैं। लेकिन राजनीतिक स्वायत्तता के साथ चाय बागान श्रमिकों, भूमि अधिकार, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्वतीय अवसंरचना के सवाल भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। दार्जिलिंग केवल पहाड़ों की रानी नहीं, बल्कि प्राकृतिक सौंदर्य, बहुभाषी संस्कृति, ऐतिहासिक विरासत और विशिष्ट गोरखा पहचान का प्रतीक है। हिमालय की गोद में बसा यह क्षेत्र पर्यटन और चाय उद्योग के माध्यम से पश्चिम बंगाल की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

लेकिन इस खूबसूरत पर्वतीय क्षेत्र के भीतर दशकों से राजनीतिक पहचान, प्रशासनिक अधिकार और विकास संबंधी अपेक्षाओं के अनेक सवाल अनसुलझे हैं।

> पर्वतीय क्षेत्रों में उच्च शिक्षा, तकनीकी प्रशिक्षण, स्वास्थ्य सेवाओं और गुणवत्तापूर्ण रोजगार का विस्तार महत्वपूर्ण आवश्यकता है। पर्यटन, चाय उद्योग और सरकारी सेवाओं पर निर्भरता कम करने के लिए आईटी, डिजिटल सेवाओं, खाद्य प्रसंस्करण, उद्यमिता और स्थानीय उत्पादों के विपणन को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

गोरखालैंड: दशकों पुरानी राजनीतिक आकांक्षा

अलग गोरखालैंड राज्य की माँग का आधुनिक राजनीतिक आंदोलन 1980 के दशक में सुबाष घीसिंग के नेतृत्व में व्यापक रूप से उभरा।

1988 में दार्जिलिंग गोरखा हिल काउंसिल और 2011 के समझौते के बाद गोरखालैंड टेरिटोरियल एडमिनिस्ट्रेशन की स्थापना हुई।

हालाँकि इन व्यवस्थाओं के बावजूद अलग राज्य और स्थायी राजनीतिक समाधान की माँग समाप्त नहीं हुई। आंदोलन के समर्थक इसे गोरखा पहचान, राजनीतिक प्रतिनिधित्व और आत्मनिर्णय की आकांक्षाओं से जोड़ते हैं। दूसरी ओर, पश्चिम बंगाल की क्षेत्रीय अखंडता और संवैधानिक व्यवस्था से जुड़े प्रश्न भी इस विवाद का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

अगस्त 2026 की वार्ता से नई उम्मीद

22 अगस्त 2026 को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की उपस्थिति में हुई त्रिपक्षीय बैठक के बाद स्थायी राजनीतिक समाधान का प्रारूप तैयार करने के लिए एक समिति गठित करने की घोषणा हुई।

पूर्व उप-राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार पंकज कुमार सिंह के नेतृत्व में यह प्रक्रिया आगे बढ़ाई गई।

अक्टूबर 2026 में विभिन्न गोरखा संगठनों और पर्वतीय नेताओं ने वार्ताकार के समक्ष अपनी माँगें प्रस्तुत कीं।

कुछ संगठनों ने अलग गोरखालैंड राज्य को ही स्थायी समाधान बताया, जबकि अन्य पक्षों ने संवैधानिक व्यवस्था के भीतर प्रभावी राजनीतिक समाधान की संभावनाओं पर जोर दिया।

इन वार्ताओं ने नई उम्मीद जगाई है, लेकिन अंतिम समझौते का स्वरूप अभी तय होना बाकी है।

जीटीए की अधिकारों का प्रश्न

जीटीए को पर्वतीय क्षेत्रों में प्रशासन, विकास और स्थानीय आवश्यकताओं से संबंधित अधिकार प्रदान करने के उद्देश्य से बनाया गया था।

लेकिन वित्तीय संसाधनों, प्रशासनिक अधिकारों, जवाबदेही और योजनाओं के क्रियान्वयन को लेकर समय-समय पर असंतोष सामने आया है।

स्थायी समाधान के लिए स्पष्ट अधिकार, पर्याप्त वित्तीय सहायता, पारदर्शी प्रशासन और स्थानीय समुदायों की प्रभावी भागीदारी आवश्यक होगी।

चाय बागान: विश्वप्रसिद्ध पहचान, श्रमिकों की कठिनाइयाँ

दार्जिलिंग की चाय विश्वभर में प्रसिद्ध है, लेकिन इसके उत्पादन और श्रमिकों की आजीविका के सामने गंभीर चुनौतियाँ हैं। हालिया शोध के अनुसार, दार्जिलिंग चाय का वार्षिक उत्पादन 1990 के दशक के लगभग 1.45 करोड़ किलोग्राम से घटकर 2023 में करीब 60 लाख किलोग्राम रह गया था।

बढ़ती उत्पादन लागत, पुराने चाय पौधे, अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा और श्रमिकों की आर्थिक असुरक्षा प्रमुख समस्याएँ हैं। उचित मजदूरी, भविष्य निधि, आवास, भूमि अधिकार और बंद चाय बागानों के पुनरुद्धार पर ठोस पहल आवश्यक है।

पर्यटन, सड़कें और पर्यावरण की चुनौती

दार्जिलिंग, कालिम्पोंग, मिरिक और कर्सियांग पर्यटन की अपार संभावनाएँ रखते हैं। लेकिन भूस्खलन, सड़क अवरोध, पेयजल संकट, अनियोजित निर्माण और पर्यावरणीय दबाव स्थानीय जीवन तथा पर्यटन उद्योग को प्रभावित करते हैं। वैज्ञानिक ढंग से सड़क निर्माण, बेहतर जल निकासी, सुरक्षित भवन, ठोस कचरा प्रबंधन और पर्यावरण-अनुकूल पर्यटन विकास पर्वतीय अर्थव्यवस्था को स्थिरता प्रदान कर सकते हैं।

शिक्षा, रोजगार और युवाओं का पलायन

पर्वतीय क्षेत्रों में उच्च शिक्षा, तकनीकी प्रशिक्षण, स्वास्थ्य सेवाओं और गुणवत्तापूर्ण रोजगार का विस्तार महत्वपूर्ण आवश्यकता है। पर्यटन, चाय उद्योग और सरकारी सेवाओं पर निर्भरता कम करने के लिए आईटी, डिजिटल सेवाओं, खाद्य प्रसंस्करण, उद्यमिता और स्थानीय उत्पादों के विपणन को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

युवा शक्ति

युवा अंदाज में राष्ट्र की आवाज

कोलकाता से प्रकाशित राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित युवाशक्ति से जुड़कर आप सामाजिक सशक्तिकरण की जीवंत आवाज बनें।

अखबार हो या
डिजिटल प्लेटफॉर्म
युवाशक्ति
हमेशा अग्रसर रहेगा

पेशेवर पत्रकारों की
निष्ठा और समर्पण
से सजा है
युवाशक्ति

आइए, वार्षिक और लाइफ सदस्यता ग्रहण करके युवाशक्ति को निरंतर समाजोपयोगी, चिंतनपरक पत्रकारिता की मसाल थामे आगे बढ़ने का हौसला दें।

Contact :

sshekharyuvashakti@gmail.com

9831494084, 9831174666

Website:https://www.yuvashaktinews.com/

Epaper:https://epaper.yuvashaktinews.com/

Facebook:https://www.facebook.com/yuvashaktinewsIN

YouTube:https://www.youtube.com/@YUVASHAKTILIVE/videos

Twitter:https://twitter.com/YUVASHAKTILIVE

Instagram: https://www.instagram.com/yuvashaktidigital

गंगा के नीचे मेट्रो, आसमान में नई उड़ान :

आधुनिक परिवहन से बदलेगा बंगाल का भविष्य!

कोलकाता में 73 किलोमीटर से अधिक मेट्रो नेटवर्क, एयरपोर्ट तक सीधी मेट्रो कनेक्टिविटी, बागडोगरा में 1,549 करोड़ का नया टर्मिनल और चार क्षेत्रीय हवाई अड्डों के विकास का समझौता-पश्चिम बंगाल आधुनिक परिवहन के नए दौर में प्रवेश कर रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी की डबल इंजन सरकार के समन्वय से सिलिगुड़ी को पूर्वोत्तर भारत का प्रमुख परिवहन एवं लॉजिस्टिक्स हब बनाने की संभावनाएँ मजबूत हुई हैं।

किसी प्रदेश की प्रगति केवल नई सड़कें और रेल लाइनें बिछाने से नहीं, बल्कि शहरों, उद्योगों, हवाई अड्डों और पर्यटन केंद्रों को एक आधुनिक परिवहन नेटवर्क से जोड़ने से होती है। पश्चिम बंगाल में मेट्रो, विमानन और क्षेत्रीय कनेक्टिविटी का विस्तार आर्थिक विकास की नई संभावनाएँ पैदा कर रहा है।



> किसी प्रदेश की प्रगति केवल नई सड़कें और रेल लाइनें बिछाने से नहीं, बल्कि शहरों, उद्योगों, हवाई अड्डों और पर्यटन केंद्रों को एक आधुनिक परिवहन नेटवर्क से जोड़ने से होती है। पश्चिम बंगाल में मेट्रो, विमानन और क्षेत्रीय कनेक्टिविटी का विस्तार आर्थिक विकास की नई संभावनाएँ पैदा कर रहा है।

कोलकाता मेट्रो: 73 किलोमीटर से आगे विकास की नई रफ्तार

भारत की पहली मेट्रो सेवा 24 अक्टूबर 1984 को कोलकाता में शुरू हुई थी। वर्ष 2025 तक इसका नेटवर्क 73.42 किलोमीटर और 58 स्टेशनों तक पहुँच चुका था।

अगस्त 2025 में ईस्ट-वेस्ट ग्रीन लाइन के पूर्ण परिचालन से हावड़ा मैदान और सॉल्टलेक सेक्टर-त के बीच यात्रा सुगम हुई। हुगली नदी के नीचे बनी 520 मीटर लंबी मेट्रो सुरंग आधुनिक इंजीनियरिंग की ऐतिहासिक उपलब्धि है।

नोआपाड़ा से जय हिंद विमानबंदर तक 6.77 किलोमीटर येलो लाइन के परिचालन से कोलकाता एयरपोर्ट को मेट्रो कनेक्टिविटी मिली। ऑरेंज लाइन पर न्यू गरिया से बेलियाघाटा और पर्पल लाइन पर जोका से माझेरहाट तक सेवाएँ शुरू हो चुकी हैं।

शेष मार्गों का विस्तार पूरा होने पर यात्रियों को और बेहतर संपर्क मिल सकेगा।

नई मेट्रो परियोजनाएँ, नई चुनौतियाँ

जोका-एस्प्लेनेड, एयरपोर्ट-बारासात और ऑरेंज लाइन के शेष हिस्सों पर कार्य जारी है।

मार्च 2026 में रेल मंत्रालय ने बताया था कि लगभग 52 किलोमीटर के चार मेट्रो कॉरिडोर पर काम चल रहा था, जिनमें लगभग 20 किलोमीटर हिस्सा भूमि अधिग्रहण और उपयोगिता सेवाओं के स्थानांतरण जैसी समस्याओं से प्रभावित था।

समयबद्ध निर्माण, बेहतर इंटरचेंज, बस-मेट्रो एकीकरण और यात्रियों के लिए सुविधाजनक अंतिम-मील संपर्क आवश्यक हैं।

बागडोगरा: उत्तर बंगाल का नया एविएशन गेटवे

सिलिगुड़ी के निकट बागडोगरा एयरपोर्ट दार्जिलिंग, सिक्किम, डुआर्स और पूर्वोत्तर भारत के लिए महत्वपूर्ण प्रवेश द्वार है। केंद्र सरकार ने यहाँ 1,549 करोड़ की लागत से नए सिविल एन्क्लेव को मंजूरी दी है। प्रस्तावित टर्मिनल का क्षेत्रफल 70,390 वर्गमीटर होगा और इसकी डिजाइन क्षमता प्रतिवर्ष एक करोड़ यात्रियों की होगी। दस विमान पार्किंग बे, आधुनिक टैक्सीवे और बहुस्तरीय पार्किंग जैसी सुविधाएँ भविष्य में यात्रियों और पर्यटन उद्योग को लाभ पहुँचा सकती हैं।

सिलिगुड़ी बनेगा पूर्वोत्तर का प्रमुख कनेक्टिविटी हब

सिलिगुड़ी की भौगोलिक स्थिति उसे बंगाल, सिक्किम, असम, बिहार और पड़ोसी देशों के बीच महत्वपूर्ण संपर्क केंद्र बनाती है।

न्यू जलपाईगुड़ी रेलवे स्टेशन, बागडोगरा एयरपोर्ट, राष्ट्रीय राजमार्ग और अंतर्राज्यीय परिवहन सेवाएँ इस क्षेत्र की बड़ी ताकत हैं। बेहतर रेल-हवाई समन्वय, आधुनिक बस टर्मिनल, माल परिवहन सुविधाएँ, वेयरहाउसिंग और कोल्ड चेन नेटवर्क से सिलिगुड़ी पर्यटन के साथ व्यापार एवं लॉजिस्टिक्स का प्रमुख केंद्र बन सकता है।

चार नए एयरपोर्ट प्रोजेक्ट से जिलों को नई उम्मीद

5 अक्टूबर 2026 को भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण और पश्चिम बंगाल सरकार के बीच क्षेत्रीय विमानन सुविधाओं के विकास के लिए समझौता हुआ।

इसके अंतर्गत हासीमारा और कलाईकुंडा में नए सिविल एन्क्लेव, बालुरघाट एयरपोर्ट का पुनरुद्धार तथा पुरुलिया के छर्रा में चरणबद्ध हवाई अड्डा विकास प्रस्तावित है।

इन परियोजनाओं के साकार होने पर उत्तर बंगाल, जंगलमहल और औद्योगिक क्षेत्रों में पर्यटन, व्यापार तथा निवेश को बढ़ावा मिल सकता है।

दुर्गापुर से कूचबिहार तक क्षेत्रीय विकास

अंडाल स्थित काजी नजरुल इस्लाम एयरपोर्ट पश्चिम बंगाल के आसनसोल-दुर्गापुर औद्योगिक क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण हवाई संपर्क उपलब्ध कराता है।

कूचबिहार, मालदा और अन्य क्षेत्रीय हवाई अड्डों की संभावनाओं का विकास भी आवश्यक है।

केंद्र की संशोधित उड़ान योजना के अंतर्गत 28,840 करोड़ के राष्ट्रीय परिव्यय से छोटे शहरों और अपेक्षाकृत कम सेवायुक्त क्षेत्रों में विमानन सुविधाएँ विकसित करने की योजना है।

लोक आस्था का महान पर्व छठ

छठ पर्व का आध्यात्मिक महत्व विशुद्ध रूप से तप, प्रकृति के प्रति कृतज्ञता और आत्म-नियंत्रण पर आधारित है। यह सनातन परंपरा का एक ऐसा पर्व है, जो बाहरी आडंबर के बजाय आंतरिक शुद्धि और सादगी को प्रधानता देता है। छठ पर्व में साक्षात दिखने वाले देवता भगवान सूर्य की उपासना होती है। सूर्य को जीवन, ऊर्जा और प्रकाश का मूल स्रोत माना गया है। इसमें डूबते (प्रत्यूषा) और उगते (ऊषा) दोनों सूर्यों को अर्घ्य देकर जीवन के चक्र और निरंतरता का सम्मान किया जाता है। वैदिक परंपरा के अनुसार सूर्य की शक्तियों का मुख्य स्रोत उनकी पत्नियां ऊषा (प्रातःकाल की पहली किरण) और प्रत्यूषा (सायंकाल की अंतिम किरण) हैं, जिनकी संयुक्त आराधना से आध्यात्मिक ऊर्जा बढ़ती है। छठ मइया को सूर्य देव की बहन माना गया है। इनकी आराधना से आरोग्यता, संतान सुख और मानसिक शांति प्राप्त होती है। यह पर्व 36 घंटे के निर्जला उपवास (बिना जल के व्रत), पवित्रता और कड़े नियमों का प्रतीक है। यह व्रती के मन, अहंकार और नकारात्मक ऊर्जा (भय, क्रोध, ईर्ष्या) को समाप्त कर चित्त को शुद्ध करता है।

छठ महज एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं

छठ महज एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, इसमें विज्ञान भी छुपा है। व्रत करने वाले शारीरिक और मानसिक रूप से इसके लिए तैयार होते हैं। छठ पूजा के दौरान इस्तेमाल की जाने वाली चीजें शरद ऋतु को अनुसार ही होती हैं। कार्तिक महीने में प्रजनन शक्ति बढ़ती है और गर्भवती महिलाओं के लिए विटामिन-डी बहुत जरूरी होता है। इसलिए सूर्य पूजा की परंपरा बनाई गई है।

सूर्य को जल देने की बात करें तो इसके पीछे रंगों का विज्ञान छुपा है। इंसान के शरीर में रंगों का संतुलन बिगड़ने से भी कई बीमारियों के शिकार होने का खतरा होता है। प्रिज्म के सिद्धांत के मुताबिक सुबह सूर्यदेव को जल चढ़ाते समय शरीर पर पड़ने वाले प्रकाश से ये रंग संतुलित हो जाते हैं। जिससे रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ जाती है। त्वचा के रोग कम होते हैं। सूर्य की रोशनी से मिलने वाला विटामिन डी शरीर में पूरा होता है। वैज्ञानिक नजरिये से देखें तो षष्ठी के दिन विशेष खगोलीय बदलाव होता है। तब सूर्य की परा बैंगनी किरणें असामान्य रूप से एकत्र होती हैं और इनके दुष्प्रभावों से बचने के लिए सूर्य की ऊषा और प्रत्यूषा के रहते जल में खड़े रहकर छठ व्रत किया जाता है। चतुर्थी को लौकी और भात का सेवन करना शरीर को व्रत के अनुकूल तैयार करने की प्रक्रिया का हिस्सा है। पंचमी को निर्जला व्रत के बाद गन्ने के रस व गुड़ से बनी खीर पर्याप्त ग्लूकोज की मात्रा सुनिश्चित करती है। छठ में बनाए जाने वाले अधिकतर प्रसाद में कैल्शियम की भारी मात्रा मौजूद होती है। भूखे रहने के दौरान अथवा उपवास की स्थिति में मानव शरीर नैचुरल कैल्शियम का ज्यादा उपभोग करता है। प्रकृति में सबसे ज्यादा विटामिन-डी सूर्योदय और सूर्यास्त के समय होता है। अर्घ्य का समय भी यही है। अदरक व गुड़ खाकर पर्व समाप्त किया जाता है। साइंस के अनुसार उपवास के बाद भारी भोजन हानिकारक है। यह व्रत सूर्य देव को समर्पित होता है और मन, शरीर और आत्मा को ऊर्जा से भरने का माध्यम माना जाता है। छठ पूजा का पहला चरण उपवास और व्रत है। यह शरीर और मन को शुद्ध करने की प्रक्रिया है। उपवास शरीर में ऑटोफैगी प्रक्रिया को सक्रिय करता है। यह एक ऐसी क्रिया है जिसमें पुराने और क्षतिग्रस्त सेल्स को हटाकर नए सेल्स का निर्माण होता है। इसके साथ ही मानसिक शांति मिलती है और व्यक्ति ऊर्जा ग्रहण करने के लिए तैयार होता है।जल में खड़े होने से शरीर का जैव-विद्युत क्षेत्र स्थिर रहता है। यह प्रक्रिया नसों पर तनाव कम करती है और मानसिक एकाग्रता बढ़ाती है। आधुनिक तनाव-निवारण तकनीकों में भी इसी तरह के ग्राउंडिंग अभ्यास शामिल हैं। रेटीना सूर्य की किरणों के लिए प्राकृतिक मार्ग है। सुबह और शाम के समय में यह सुरक्षित होता है। इससे मस्तिष्क के पीनियल, पिट्यूटरी और हाइपोथैलेमस ग्रंथियां सक्रिय होती हैं, जो नींद, मूड और हार्मोन संतुलन जैसी महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं को नियंत्रित करती हैं। छठ पूजा के अंतिम चरण में कुंडलिनी शक्ति के जागरण की मान्यता है। यह ऊर्जा रीढ़ की हड्डी से ऊपर की ओर उठती है, जिससे चेतना का स्तर बढ़ता है। मेडिटेशन और ऊर्जा अभ्यास से मस्तिष्क की विद्युत तरंगें सक्रिय होती हैं। इससे मानसिक स्पष्टता और शारीरिक ऊर्जा बढ़ती है।अंतिम चरण में व्रती स्वयं ब्रह्मांडीय ऊर्जा का माध्यम बनते हैं और इसे पुनः विश्व में प्रवाहित करते हैं। न्यूरोसाइंस इसे 'फ्लो स्टेट' कहती है। गहरी ध्यानावस्था में मस्तिष्क तरंगों का संतुलन एकता का अनुभव कराता है, जिससे शरीर, मन और आत्मा का सामंजस्य बनता है।



सूर्य को जल देने की बात करें तो इसके पीछे रंगों का विज्ञान छुपा है। इंसान के शरीर में रंगों का संतुलन बिगड़ने से भी कई बीमारियों के शिकार होने का खतरा होता है। प्रिज्म के सिद्धांत के मुताबिक सुबह सूर्यदेव को जल चढ़ाते समय शरीर पर पड़ने वाले प्रकाश से ये रंग संतुलित हो जाते हैं।

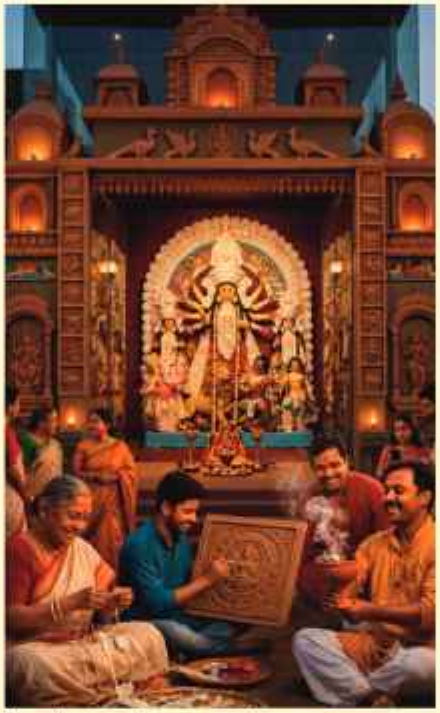
सूर्य को जल अर्पित करने का विज्ञान भी रोचक है। सुबह सूर्य की किरणों से शरीर में रंग संतुलन स्थापित होता है और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। एक ऐसा त्यौहार जो चार दिन चलता है, कोई दंगा नहीं होता, इंटरनेट कनेक्शन नहीं काटा जाता, किसी शांति समिति की बैठक कराने की जरूरत नहीं पड़ती, चंदे के नाम पर गुंडा गर्दी नहीं होती और जबरन उगाही भी नहीं! शराब की दुकाने बंद रखने का नोटिस नहीं चिपकना पड़ता, मिठाई के नाम पर मिलावट नहीं परोसी जाती है!

परंपरा से विश्व पहचान तक :

बंगाल की दुर्गापूजा लिख रही संस्कृति और समृद्धि का नया इतिहास!

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'वोकल फॉर लोकल' और सांस्कृतिक विरासत संरक्षण के दृष्टिकोण के साथ केंद्र-राज्य का सहयोग स्थानीय कारीगरों, सांस्कृतिक पर्यटन और रचनात्मक उद्योगों को नई संभावनाएँ प्रदान कर सकता है।

यूनेस्को की विश्व सांस्कृतिक विरासत में प्रतिष्ठित बंगाल की दुर्गापूजा आज आस्था, कला, पर्यटन और रचनात्मक अर्थव्यवस्था का अद्भुत संगम बन चुकी है। सदियों पुरानी पारंपरिक पूजा से लेकर आधुनिक थीम पंडालों तक, यह महोत्सव बंगाल की सांस्कृतिक शक्ति का प्रतीक है। अब चुनौती इस अनमोल विरासत को सुरक्षित रखते हुए नई पीढ़ी और वैश्विक मंच तक पहुँचाने की है। बंगाल की दुर्गापूजा केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं, बल्कि उसकी आत्मा, सांस्कृतिक चेतना और सामाजिक एकता की जीवंत अभिव्यक्ति है। शंखध्वनि, ढाक की गूँज, धुनुची नृत्य, सिंदूर खेला और माँ दुर्गा की पारंपरिक प्रतिमाएँ पीढ़ियों से बंगाल की पहचान रही हैं। समय के साथ पूजा का स्वरूप बदला है, लेकिन माँ दुर्गा के प्रति श्रद्धा और सामूहिक उत्सव की भावना आज भी इसकी सबसे बड़ी शक्ति है।



राजबाड़ी से बारोवारी तक: परंपरा की गौरवशाली यात्रा

बंगाल में दुर्गापूजा की ऐतिहासिक परंपरा जमींदार परिवारों और राजबाड़ियों की पूजा से जुड़ी रही है। बाद में सामुदायिक बारोवारी और सार्वजनिक पूजा समितियों ने इस उत्सव को व्यापक सामाजिक स्वरूप दिया। कोलकाता की शोभाबाजार राजबाड़ी जैसी ऐतिहासिक पूजाएँ आज भी पारंपरिक रीति-रिवाजों की महत्वपूर्ण पहचान हैं। एकचाला प्रतिमा, पारंपरिक अल्पना, शोलाशिल्प और वैदिक मंत्रोच्चार जैसी परंपराएँ बंगाल की धार्मिक एवं कलात्मक विरासत को जीवित रखती हैं।

32,377 करोड़ की सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था

ब्रिटिश काउंसिल द्वारा पश्चिम बंगाल पर्यटन विभाग के लिए किए गए 2019 के अध्ययन में दुर्गापूजा से जुड़े रचनात्मक उद्योगों का आर्थिक मूल्य लगभग 32,377 करोड़ आँका गया था। यह उस समय राज्य की अर्थव्यवस्था के लगभग 2.58 प्रतिशत के बराबर था। प्रतिमा निर्माण, वस्त्र, सजावट, खानपान, परिवहन, पर्यटन और स्थानीय व्यापार से हजारों उद्यमियों एवं कारीगरों को आजीविका के अवसर मिलते हैं। यह ऐतिहासिक अनुमान दुर्गापूजा की आर्थिक क्षमता को दर्शाता है, हालाँकि इसे 2026 के वर्तमान कारोबार का आँकड़ा नहीं माना जाना चाहिए।

थीम पूजा के दौर में पारंपरिक पहचान का संरक्षण

आधुनिक थीम पंडालों, डिजिटल प्रकाश व्यवस्था और नवीन कलात्मक प्रयोगों ने दुर्गापूजा को नए दर्शकों तक पहुँचाया है। लेकिन भव्यता की बढ़ती प्रतिस्पर्धा के बीच पारंपरिक प्रतिमा निर्माण, शास्त्रीय पूजा पद्धतियों, ढाक संगीत और स्थानीय शिल्प को सुरक्षित रखना भी आवश्यक है। आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन ही इस उत्सव की मौलिक पहचान को भविष्य तक पहुँचाएगा।

यूनेस्को ने दी बंगाल की संस्कृति को वैश्विक पहचान

दिसंबर 2021 में यूनेस्को ने 'दुर्गापूजा इन कोलकाता' को मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची में शामिल किया। इस उपलब्धि ने बंगाल की सामूहिक रचनात्मकता, धार्मिक परंपरा और सांस्कृतिक विविधता को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाई। कुम्हारटोली के मूर्तिकार, ढाक वादक, पंडाल कलाकार, प्रकाश सज्जाकार और पारंपरिक शिल्पकार इस विश्वप्रसिद्ध महोत्सव की वास्तविक शक्ति हैं।

पर्यटन और वैश्विक सांस्कृतिक उत्सव की संभावनाएँ

कोलकाता की दुर्गापूजा अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक पर्यटन का प्रमुख आकर्षण बनने की क्षमता रखती है। बेहतर परिवहन, बहुभाषी पर्यटक सुविधाएँ, सांस्कृतिक मार्गदर्शन और पारंपरिक पूजा स्थलों के संरक्षण से विदेशी एवं घरेलू पर्यटकों को अधिक समृद्ध अनुभव दिया जा सकता है। कुम्हारटोली, ऐतिहासिक राजबाड़ियाँ और पारंपरिक शिल्प केंद्र सांस्कृतिक पर्यटन के विशेष आकर्षण बन सकते हैं।

पर्यावरण और नई पीढ़ी से जुड़ेगा भविष्य

प्राकृतिक सामग्री से प्रतिमा निर्माण, पर्यावरण-अनुकूल सजावट, जिम्मेदार विसर्जन और कचरा प्रबंधन दुर्गापूजा के टिकाऊ भविष्य के लिए आवश्यक हैं। युवाओं को पारंपरिक कला, लोकसंगीत, पूजा विधियों और सामुदायिक सेवा से जोड़ना भी महत्वपूर्ण है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'वोकल फॉर लोकल' और सांस्कृतिक विरासत संरक्षण के दृष्टिकोण के साथ केंद्र-राज्य का सहयोग स्थानीय कारीगरों, सांस्कृतिक पर्यटन और रचनात्मक उद्योगों को नई संभावनाएँ प्रदान कर सकता है।

आस्था की विरासत, समृद्ध बंगाल का भविष्य

बंगाल की दुर्गापूजा की सबसे बड़ी विशेषता उसकी सामूहिकता है। यहाँ परंपरा और आधुनिकता, श्रद्धा और कला तथा संस्कृति और अर्थव्यवस्था एक-दूसरे के पूरक बनते हैं।

"BENGAL RISING' का सांस्कृतिक संकल्प तभी सार्थक होगा, जब दुर्गापूजा की विश्वव्यापी पहचान के साथ उसकी मूल परंपराएँ, कलाकारों की आजीविका और सामुदायिक भावना भी सुरक्षित रहेंगी। क्योंकि बंगाल की दुर्गापूजा केवल पाँच दिनों का उत्सव नहीं, बल्कि सदियों की आस्था, पीढ़ियों की स्मृतियों और आने वाले कल की सांस्कृतिक पहचान है।

परंपरा का सम्मान, संस्कृति का संरक्षण और विश्व मंच पर बंगाल का गौरव-यही होगी दुर्गापूजा के नए युग की पहचान!

स्वस्थ बंगाल, समृद्ध बंगाल:

25,530 करोड़ के स्वास्थ्य बजट से चिकित्सा क्रांति की नई उम्मीद!



आयुष्मान भारत का विस्तार, मेडिकल कॉलेजों के विकास की योजनाएँ और आधुनिक अस्पतालों की बढ़ती आवश्यकता-पश्चिम बंगाल का स्वास्थ्य क्षेत्र परिवर्तन के महत्वपूर्ण दौर में है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी के नेतृत्व में केंद्र-राज्य सहयोग से गुणवत्तापूर्ण इलाज को हर जिले और हर परिवार तक पहुँचाने की नई संभावनाएँ बनी हैं। स्वास्थ्य किसी भी विकसित समाज की सबसे महत्वपूर्ण आधारशिला है। पश्चिम बंगाल ने चिकित्सा शिक्षा, अनुसंधान और अस्पताल सेवाओं के क्षेत्र में ऐतिहासिक पहचान बनाई है। कोलकाता लंबे समय से पूर्वी भारत के प्रमुख चिकित्सा केंद्रों में शामिल रहा है। लेकिन महानगरों में आधुनिक सुविधाओं की उपलब्धता और ग्रामीण क्षेत्रों में विशेषज्ञ चिकित्सा की कमी के बीच अंतर आज भी बड़ी चुनौती है।

25,530 करोड़ का स्वास्थ्य बजट

पश्चिम बंगाल के 2026-27 बजट में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण क्षेत्र के लिए लगभग 25,530 करोड़ का प्रावधान किया गया है। इसमें शहरी स्वास्थ्य सेवाओं के लिए 9,025 करोड़, ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं के लिए 3,164 करोड़ तथा आयुष्मान भारत योजना के लिए 3,100 करोड़ का आवंटन शामिल है। पिछले वित्त वर्ष के संशोधित अनुमान की तुलना में स्वास्थ्य क्षेत्र का कुल बजटीय प्रावधान लगभग 23 प्रतिशत अधिक है। अब प्राथमिकता यह होनी चाहिए कि बजट का प्रभाव अस्पतालों में उपलब्ध दवाओं, चिकित्सा उपकरणों, प्रशिक्षित कर्मचारियों

> पश्चिम बंगाल ने चिकित्सा शिक्षा, अनुसंधान और अस्पताल सेवाओं के क्षेत्र में ऐतिहासिक पहचान बनाई है। कोलकाता लंबे समय से पूर्वी भारत के प्रमुख चिकित्सा केंद्रों में शामिल रहा है। लेकिन महानगरों में आधुनिक सुविधाओं की उपलब्धता और ग्रामीण क्षेत्रों में विशेषज्ञ चिकित्सा की कमी के बीच अंतर आज भी बड़ी चुनौती है।

और रोगियों को मिलने वाली सेवाओं में दिखाई दे।

मेडिकल कॉलेज और विशेषज्ञ चिकित्सा की आवश्यकता

कोलकाता मेडिकल कॉलेज, एसएसकेएम, आरजी कर, एनआरएस और एम्स कल्याणी जैसे संस्थान चिकित्सा शिक्षा एवं उपचार व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उत्तर बंगाल, जंगलमहल और दूरस्थ जिलों में विशेषज्ञ डॉक्टरों, आधुनिक डायग्नोस्टिक सुविधाओं और आपातकालीन चिकित्सा सेवाओं का विस्तार आवश्यक है। अलीपुरद्वार, कालिम्पोंग और दक्षिण दिनाजपुर में नए मेडिकल कॉलेज तथा उत्तर बंगाल में एक नए एम्स की स्थापना के प्रस्ताव सामने आए हैं। इनकी स्वीकृति और क्रियान्वयन क्षेत्रीय स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत कर सकते हैं।

ग्रामीण स्वास्थ्य: सबसे महत्वपूर्ण चुनौती

सुंदरबन के द्वीपीय क्षेत्रों, दार्जिलिंग के पहाड़ों और जंगलमहल के दूरदराज इलाकों में समय पर उपचार उपलब्ध कराना विशेष चुनौती है।

प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों को मजबूत बनाने, डॉक्टरों की नियमित उपलब्धता, एम्बुलेंस नेटवर्क, टेलीमेडिसिन और मातृ-शिशु स्वास्थ्य सेवाओं पर विशेष ध्यान आवश्यक है। बीमारी की शुरुआती पहचान और निवारक स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार बड़े अस्पतालों पर दबाव भी कम कर सकता है।

निजी अस्पताल, आधुनिक तकनीक और मेडिकल टूरिज्म

कोलकाता में निजी अस्पतालों, सुपर-स्पेशियलिटी सेवाओं और उन्नत डायग्नोस्टिक सुविधाओं का विस्तार हुआ है। कैंसर, हृदय रोग, न्यूरोलॉजी, अंग प्रत्यारोपण और जटिल शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में आधुनिक तकनीक पूर्वी भारत के मरीजों के लिए महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करती है। लेकिन उपचार की पारदर्शी लागत, मरीजों के अधिकार, स्वास्थ्य बीमा दावों का समयबद्ध निपटारा और चिकित्सा सेवाओं की गुणवत्ता सुनिश्चित करना भी आवश्यक है।

भविष्य की स्वास्थ्य व्यवस्था कैसी हो?

डिजिटल हेल्थ रिकॉर्ड, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित डायग्नोस्टिक्स, सस्ती जेनेरिक दवाएँ, प्रशिक्षित नर्सिंग स्टाफ और जिला स्तर पर विशेषज्ञ चिकित्सा भविष्य की प्रमुख आवश्यकताएँ हैं। मधुमेह, हृदय रोग, कैंसर तथा अन्य दीर्घकालिक बीमारियों की रोकथाम के लिए नियमित जाँच और जनजागरूकता अभियान भी जरूरी हैं।

आयुष्मान भारत से स्वास्थ्य सुरक्षा का विस्तार

8 जून 2026 को पश्चिम बंगाल आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना लागू करने वाला देश का 36वाँ राज्य अथवा केंद्रशासित प्रदेश बना। इस योजना के अंतर्गत पात्र परिवारों को अस्पताल में भर्ती होकर उपचार कराने के लिए प्रतिवर्ष 5 लाख तक का स्वास्थ्य कवर उपलब्ध है। राज्य की स्वास्थ्य साथी व्यवस्था के साथ समन्वय तथा लाभार्थियों के पंजीकरण की प्रक्रिया से अधिक परिवारों को कैशलेस उपचार उपलब्ध कराने का अवसर पैदा हुआ है। अगस्त 2026 में एम्स कल्याणी में आयुष्मान भारत के अंतर्गत उपचार सेवाओं का संचालन भी शुरू हुआ।

विकसित बंगाल की पहली शर्त: स्वस्थ नागरिक

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'विकसित भारत 2047' विजन और केंद्र-राज्य के प्रभावी समन्वय से बंगाल में आधुनिक, सुलभ और जवाबदेह स्वास्थ्य व्यवस्था का विस्तार संभव है।क्योंकि किसी प्रदेश की समृद्धि केवल उद्योगों और इमारतों से नहीं, बल्कि उसके नागरिकों के स्वास्थ्य, सुरक्षा और जीवन की गुणवत्ता से मापी जाती है।

रवीन्द्रनाथ की लेखनी से डिजिटल क्रांति तक

विश्व मंच पर बांग्ला भाषा की नई उड़ान!



भारत की शास्त्रीय भाषाओं में शामिल बांग्ला केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि साहित्य, संगीत, स्वतंत्रता आंदोलन और सांस्कृतिक चेतना की अमूल्य विरासत है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर से लेकर आधुनिक डिजिटल रचनाकारों तक इसकी गौरवशाली यात्रा अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, वैश्विक शिक्षा और तकनीकी नवाचार के नए युग में प्रवेश कर रही है।

किसी समाज की वास्तविक पहचान उसकी भाषा, साहित्य और सांस्कृतिक परंपराओं में निहित होती है। पश्चिम बंगाल के लिए बांग्ला भाषा केवल मातृभाषा नहीं, बल्कि उसकी ऐतिहासिक चेतना, सामाजिक एकता और बौद्धिक विरासत का आधार है।

सदियों से बांग्ला साहित्य ने भारत की सांस्कृतिक और राष्ट्रीय चेतना को नई दिशा दी है। आज आवश्यकता है कि इस समृद्ध विरासत को आधुनिक तकनीक और नई पीढ़ी की आकांक्षाओं से जोड़ा जाए।

साहित्य की वह विरासत जिसने दुनिया को प्रभावित किया

बांग्ला साहित्य की समृद्ध परंपरा में चंडीदास, माइकल मधुसूदन दत्त, बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय, शरतचंद्र चट्टोपाध्याय और विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय जैसे साहित्यकारों का उल्लेखनीय योगदान रहा है।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर को 1913 में साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला। उनकी रचनाओं ने भारतीय साहित्य को विश्वव्यापी प्रतिष्ठा दिलाई।

बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय का 'वंदे मातरम' भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की प्रेरणादायक अभिव्यक्ति बना, जबकि काजी नजरुल इस्लाम की रचनाओं ने विद्रोह, समानता और मानवीय गरिमा का संदेश दिया।

शास्त्रीय भाषा का सम्मान: ऐतिहासिक उपलब्धि

अक्टूबर 2024 में भारत सरकार ने बांग्ला को शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्रदान किया।

> "BENGAL RISING' का भविष्य केवल आर्थिक प्रगति से नहीं, बल्कि अपनी मातृभाषा और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण से भी जुड़ा है। क्योंकि जिस समाज की भाषा जीवंत रहती है, उसकी स्मृतियाँ, विचार और सांस्कृतिक पहचान भी आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित रहती हैं। बांग्ला की समृद्ध विरासत, आधुनिक तकनीक की शक्ति और नई पीढ़ी की रचनात्मकता–यही बनेगी विकसित बंगाल की नई सांस्कृतिक पहचान!

इस मान्यता ने बांग्ला की प्राचीन साहित्यिक परंपरा, भाषाई विकास और सांस्कृतिक योगदान को राष्ट्रीय स्तर पर विशेष सम्मान दिया।

इस उपलब्धि के साथ प्राचीन पांडुलिपियों के संरक्षण, भाषाई अनुसंधान और शास्त्रीय साहित्य के अध्ययन को बढ़ावा देने की नई संभावनाएँ बनी हैं।

शिक्षा में मातृभाषा, भविष्य में नए अवसर

प्राथमिक शिक्षा में मातृभाषा का महत्व व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है। बांग्ला माध्यम के विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, आधुनिक पाठ्यसामग्री और प्रशिक्षित शिक्षकों की उपलब्धता आवश्यक है। नई शिक्षा नीति 2020 भी प्रारंभिक शिक्षा में मातृभाषा या स्थानीय भाषा के उपयोग को प्रोत्साहित करती है। बांग्ला के साथ हिंदी, अंग्रेजी और अन्य भाषाओं का ज्ञान युवाओं के लिए रोजगार तथा उच्च शिक्षा के अवसर बढ़ा सकता है।

डिजिटल युग में बांग्ला की नई पहचान

आज बांग्ला भाषा समाचार पोर्टलों, सोशल मीडिया, ई-पुस्तकों, ऑडियोबुक, पॉडकास्ट और डिजिटल मनोरंजन के माध्यम से नए पाठकों तक पहुँच रही है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित अनुवाद, वॉइस रिकग्निशन, टेक्स्ट-टू-स्पीच और डिजिटल शिक्षा के क्षेत्र में बांग्ला के लिए बड़ी संभावनाएँ हैं।

स्थानीय भाषा में तकनीकी सामग्री विकसित होने से ग्रामीण विद्यार्थियों, छोटे उद्यमियों और डिजिटल सेवाओं के उपयोगकर्ताओं को लाभ मिल सकता है।

नई पीढ़ी और भाषा संरक्षण की चुनौती

शहरीकरण, अंग्रेजी माध्यम की बढ़ती लोकप्रियता और बदलती डिजिटल आदतों के बीच युवा पीढ़ी को बांग्ला साहित्य से जोड़ना महत्वपूर्ण है।

पुस्तकालयों का आधुनिकीकरण, साहित्यिक उत्सव, बाल साहित्य, डिजिटल पुस्तक संग्रह और रचनात्मक लेखन प्रतियोगिताएँ इस दिशा में प्रभावी पहल हो सकती हैं। कोलकाता अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले जैसी सांस्कृतिक परंपराएँ पाठकों और लेखकों के बीच संवाद को जीवित रखती हैं।

विश्वभर में बांग्ला की सांस्कृतिक शक्ति

बांग्ला भारत और बांग्लादेश सहित विश्व के अनेक देशों में बोली और पढ़ी जाती है। यूनेस्को द्वारा 21 फरवरी को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में मान्यता देने की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 1952 के बांग्ला भाषा आंदोलन से जुड़ी है। यह इतिहास भाषाई सम्मान, सांस्कृतिक पहचान और मातृभाषा के अधिकारों के महत्व को रेखांकित करता है।

विकसित बंगाल की सांस्कृतिक आधारशिला

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'विकसित भारत 2047' के संकल्प में भारतीय भाषाओं, ज्ञान परंपराओं और सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण महत्वपूर्ण स्थान रखता है। केंद्र और राज्य के समन्वित प्रयासों से बांग्ला भाषा में अनुसंधान, डिजिटल तकनीक, अनुवाद, प्रकाशन और रोजगारपरक शिक्षा को नई दिशा मिल सकती है।

कर्मभूमि बंगाल, सपने पूरे भारत के : प्रदेश की समृद्धि में प्रवासी समाज की अनमोल भागीदारी!

बिहार की श्रमशक्ति, राजस्थान की उद्यमशीलता, गुजरात की व्यापारिक परंपरा और उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत–देश के विभिन्न राज्यों से आकर बसे लाखों परिवारों ने पश्चिम बंगाल को अपनी कर्मभूमि बनाया है। उद्योग, व्यापार, परिवहन, शिक्षा और सामाजिक सेवा में उनके योगदान ने बंगाल की बहुसांस्कृतिक पहचान को मजबूत किया है। अब आवश्यकता है समान अवसर, सामाजिक सम्मान और साझा विकास की नई दिशा तय करने की।

पश्चिम बंगाल सदियों से व्यापार, उद्योग, शिक्षा और सांस्कृतिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र रहा है। विशेषकर कोलकाता ने देश के विभिन्न हिस्सों से आए लोगों को रोजगार, व्यापार और सामाजिक जीवन में आगे बढ़ने के अवसर प्रदान किए हैं।

बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, झारखंड, ओडिशा, पंजाब और अन्य राज्यों से आए अनेक परिवार पीढ़ियों से बंगाल में रह रहे हैं। उनके लिए यह प्रदेश केवल रोजगार का स्थान नहीं, बल्कि घर, पहचान और भविष्य की आशाओं का केंद्र है।

व्यापार और उद्योग में ऐतिहासिक योगदान

कोलकाता के बड़ाबाजार से लेकर हावड़ा, हुगली, आसनसोल, दुर्गापुर और सिलीगुड़ी तक विभिन्न समुदायों ने व्यापारिक गतिविधियों के विस्तार में योगदान दिया है। राजस्थान मूल के मारवाड़ी समाज की व्यापार, वित्त, उद्योग और परोपकार में ऐतिहासिक भूमिका रही है। गुजराती, पंजाबी और अन्य व्यावसायिक समुदायों ने भी व्यापारिक नेटवर्क और उद्यमिता को मजबूत किया है। बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखंड और ओडिशा से आए श्रमिकों ने जूट मिलों, निर्माण कार्यों, परिवहन, औद्योगिक प्रतिष्ठानों और सेवा क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

संस्कृति का अनूठा संगम

बंगाल की सांस्कृतिक विविधता उसकी सबसे बड़ी शक्तियों में शामिल है। दुर्गापूजा और कालीपूजा के साथ छठ महापर्व, गणगौर, तीज, रामनवमी, गुरुपर्व और अन्य धार्मिक–सांस्कृतिक आयोजन विभिन्न समुदायों की परंपराओं को जीवंत रखते हैं।

हिंदी, बांग्ला, भोजपुरी, मारवाड़ी, गुजराती, पंजाबी और अन्य भाषाओं का सहअस्तित्व सामाजिक संपर्क और सांस्कृतिक आदान–प्रदान को समृद्ध करता है। स्थानीय बांग्ला संस्कृति का सम्मान और प्रत्येक समुदाय की मातृभाषा एवं परंपराओं का संरक्षण सामाजिक सद्भाव की मजबूत आधारशिला है।

बंगाल की सांस्कृतिक विविधता उसकी सबसे बड़ी शक्तियों में शामिल है। दुर्गापूजा और कालीपूजा के साथ छठ महापर्व, गणगौर, तीज, रामनवमी, गुरुपर्व और अन्य धार्मिक–सांस्कृतिक आयोजन विभिन्न समुदायों की परंपराओं को जीवंत रखते हैं।



राजनीतिक भागीदारी और समान अवसर

लोकतांत्रिक व्यवस्था में प्रत्येक पात्र नागरिक को संवैधानिक अधिकारों के अनुसार राजनीतिक भागीदारी का अवसर प्राप्त है। प्रवासी मूल के स्थायी निवासियों की सामाजिक आवश्यकताओं, व्यापारिक समस्याओं और नागरिक सुविधाओं से जुड़े प्रश्नों को स्थानीय प्रशासन एवं जनप्रतिनिधियों के समक्ष उचित स्थान मिलना चाहिए। साथ ही राजनीतिक संवाद को भाषाई या क्षेत्रीय विभाजन का माध्यम बनाने के बजाय साझा नागरिक हितों पर केंद्रित रखना आवश्यक है।

पीढ़ियों से बसे परिवारों की पहचान

बंगाल में दूसरे राज्यों से आए सभी लोगों को एक समान श्रेणी में रखना उचित नहीं होगा।

अनेक परिवार यहाँ कई पीढ़ियों से स्थायी रूप से बसे हैं। उनके बच्चे बंगाल में जन्म लेते हैं, यहीं शिक्षा प्राप्त करते हैं और स्थानीय अर्थव्यवस्था तथा सामाजिक जीवन में सक्रिय भागीदारी निभाते हैं। वहीं रोजगार की तलाश में आने वाले नए प्रवासी श्रमिकों की आवश्यकताएँ अलग हो सकती हैं। इसलिए आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य, श्रमिक सुरक्षा और सरकारी सेवाओं तक पहुँच से संबंधित नीतियों में इन भिन्न परिस्थितियों का ध्यान रखना आवश्यक है।

रोजगार, व्यापार और नई पीढ़ी की चुनौतियाँ

बदलती अर्थव्यवस्था में छोटे व्यापारियों, पारंपरिक उद्योगों और असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों के सामने नई चुनौतियाँ उभर रही हैं।

आधुनिक बाजार, डिजिटल व्यापार, कौशल प्रशिक्षण, सुलभ वित्त और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं तक पहुँच से इन समुदायों की आर्थिक स्थिति मजबूत हो सकती है।

नई पीढ़ी को बांग्ला सहित अन्य भारतीय भाषाओं का ज्ञान, आधुनिक शिक्षा और उद्यमिता के अवसर उपलब्ध कराना भी महत्वपूर्ण है।

साझा विकास से बनेगा समृद्ध बंगाल

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' और 'विकसित भारत 2047' के संकल्प के अनुरूप बंगाल की बहुसांस्कृतिक शक्ति को विकास का आधार बनाया जा सकता है।

केंद्र और राज्य सरकारों के समन्वय से उद्योग, निवेश, रोजगार, सामाजिक सुरक्षा और नागरिक सुविधाओं का विस्तार स्थानीय तथा प्रवासी मूल के सभी निवासियों को लाभ पहुँचा सकता है।

दीपावली 2026-27 का भविष्यदर्शन

।। ग्रह स्थिति (ग्रह संचरण) ।।

मंगल: वर्ष आरम्भ से कर्क राशि पर, 17 नवम्बर से सिंह राशि पर, (17 जनवरी 2027 से वक्री), 24 फरवरी से कर्क राशि पर (21 मार्च से मार्गी), 4 मई से सिंह राशि पर, 8 जुलाई से कन्या राशि पर, 25 अगस्त से तुला राशि पर, 7 अक्टूबर से वृश्चिक राशि पर।

बुध: वर्ष आरम्भ से तुला राशि पर, 4 दिसम्बर से वृश्चिक राशि पर, 22 दिसम्बर से धनु राशि पर, 9 जनवरी 2027 से मकर राशि पर, 28 जनवरी से कुम्भ राशि पर, (15 फरवरी से वक्री एवं 7 मार्च से मार्गी) 4 अप्रैल से मीन राशि पर, 21 अप्रैल से मेष राशि पर, 6 मई से वृष राशि पर, 25 मई से मिथुन राशि पर, (9 जून से वक्री) 24 जून से वृष राशि पर, (29 जून से मार्गी), 4 जुलाई से मिथुन राशि पर, 28 जुलाई से कर्क राशि पर, 14 अगस्त से सिंह राशि पर, 31 अगस्त से कन्या राशि पर, 22 सितम्बर से तुला राशि पर,(3 अक्टूबर से वक्री), 10 अक्टूबर से कन्या राशि पर।

गुरु: वर्ष आरम्भ से सिंह राशि पर, (27 दिसम्बर से वक्री), 21 फरवरी 2027 से कर्क राशि पर, (7 अप्रैल से मार्गी), 8 जून से सिंह राशि पर।

शुक्र: वर्ष आरम्भ से कन्या राशि पर वक्री, (14 नवम्बर से मार्गी) 25 नवम्बर से तुला राशि पर, 2 जनवरी 2027 से वृश्चिक राशि पर, 29 जनवरी से धनु राशि पर, 24 फरवरी से मकर राशि पर, 21 मार्च से कुम्भ राशि पर, 15 अप्रैल से मीन राशि पर, 9 मई से मेष राशि पर, 3 जून से वृष राशि पर, 27 जून से मिथुन राशि पर, 22 जुलाई से कर्क राशि पर, 15 अगस्त से सिंह राशि पर, 9 सितम्बर से कन्या राशि पर, 3 अक्टूबर से तुला राशि पर।

शनि: वर्ष आरम्भ से मीन राशि पर वक्री एवं 1 दिसम्बर से मार्गी, 15 जुलाई से मेष राशि पर, (12 अगस्त से वक्री) 6 सितम्बर से मीन राशि पर।

राहु: वर्ष आरम्भ से कुम्भ राशि पर, 3 दिसम्बर से मकर राशि पर। केतु: वर्ष आरम्भ से सिंह राशि पर, 3 दिसम्बर से कर्क राशि पर।



मेष राशि

वार्षिक संकेत: संघर्ष से उपलब्धि, जिम्मेदारियों में वृद्धि और नई शुरुआत। मेष राशि के जातकों के लिए यह वर्ष आत्मविश्वास, कार्यक्षेत्र में बदलाव और व्यक्तिगत जिम्मेदारियों की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रहेगा। वर्ष के शुरुआती महीनों में परिस्थितियों को समझने और अधूरे कार्यों को व्यवस्थित करने की आवश्यकता होगी। जून 2027 के बाद जीवन की गति में परिवर्तन महसूस हो सकता है।

करियर एवं व्यवसाय: नवंबर 2026 से जनवरी 2027 तक नए अवसर सामने आ सकते हैं, लेकिन किसी भी प्रस्ताव को स्वीकार करने से पहले उसकी शर्तों को समझना आवश्यक होगा। जनवरी से जून 2027 के बीच कार्यक्षेत्र में पुराने प्रयासों का पुनर्मूल्यांकन करना पड़ सकता है। जून में शनि के आपकी राशि में प्रवेश से जिम्मेदारियाँ बढ़ सकती हैं। अक्टूबर में शनि के पुनः मीन राशि में लौटने के बाद कुछ योजनाओं पर दोबारा विचार करना पड़ सकता है।

व्यवसाय करने वालों के लिए यह वर्ष योजनाओं को मजबूत करने, खर्चों पर नियंत्रण रखने और जल्दबाजी में विस्तार न करने का संकेत देता है।

धन एवं आर्थिक स्थिति: आय के अवसर बन सकते हैं, लेकिन जिम्मेदारियों और आवश्यक खर्चों में भी वृद्धि संभव है। जोखिमपूर्ण निवेश, बिना जाँच-पड़ताल के साझेदारी और दूसरों की आर्थिक जिम्मेदारी लेने से बचें।

प्रेम एवं वैवाहिक जीवन: संबंधों में स्पष्ट संवाद आवश्यक रहेगा। कार्य की व्यस्तता के कारण परिवार को कम समय देने से गलतफहमियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। अविवाहित जातकों को नए परिचय मिल सकते हैं, लेकिन विवाह संबंधी निर्णय सोच-समझकर लेना बेहतर होगा।

शिक्षा एवं प्रतियोगिता: नियमित अध्ययन और अनुशासन से लाभ मिलेगा। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों को निरंतर प्रयास बनाए रखना चाहिए।

स्वास्थ्य: काम का दबाव और अनियमित दिनचर्या थकान बढ़ा सकती है। पर्याप्त नींद, व्यायाम और नियमित स्वास्थ्य जाँच पर ध्यान दें।

ग्रहों का विशेष प्रभाव: गुरु का सिंह राशि में गोचर प्रेम, शिक्षा, संतान और रचनात्मक कार्यों से जुड़े विषयों को सक्रिय कर सकता है। कर्क राशि में गुरु की वापसी घर-परिवार और संपत्ति संबंधी योजनाओं पर ध्यान बढ़ा सकती है। शनि का मेष में प्रवेश आत्मअनुशासन और जिम्मेदारी का महत्त्व बढ़ाएगा। राहु का मकर और केतु का कर्क में प्रवेश करियर तथा पारिवारिक जीवन के बीच संतुलन बनाने की आवश्यकता दर्शाता है।

वर्ष का संदेश: जल्दबाजी के बजाय धैर्य और निरंतर प्रयास को प्राथमिकता दें।

शुभ रंग: लाल, केसरिया, हल्का सुनहरा

वृषभ राशि

वार्षिक संकेत: आर्थिक नियोजन, पारिवारिक स्थिरता और सामाजिक प्रतिष्ठा। वृषभ राशि के जातकों के लिए यह वर्ष आर्थिक मामलों को व्यवस्थित करने, पारिवारिक संबंधों को मजबूत बनाने और भविष्य की योजनाओं पर काम करने का अवसर प्रदान कर सकता है। सफलता का आधार व्यावहारिक सोच और धैर्य रहेगा।



आचार्य डॉ. राकेश कुमार पाण्डेय वरिष्ठ ज्योतिषाचार्य
मोबाइल: 9830058082

करियर एवं व्यवसाय: वर्ष के शुरुआती महीनों में संपर्कों और सहयोग के माध्यम से नए अवसर मिल सकते हैं। जनवरी से जून 2027 के बीच संवाद, प्रशिक्षण, यात्राओं और नए कौशल से जुड़े कार्यों में रुचि बढ़ सकती है। जून के बाद कार्यक्षेत्र में पर्दे के पीछे की तैयारी, खर्चों की समीक्षा और पुरानी योजनाओं में सुधार आवश्यक हो सकता है।

व्यवसायियों को साझेदारी और अनुबंधों में पारदर्शिता बनाए रखनी चाहिए। किसी पुराने व्यावसायिक संपर्क से दोबारा अवसर मिल सकता है।

धन एवं आर्थिक स्थिति: बचत और दीर्घकालीन आर्थिक योजना पर ध्यान देने से लाभ हो सकता है। घर, वाहन या परिवार से संबंधित खर्च बढ़ सकते हैं। अचानक मिलने वाले लाभ को निश्चित आय मानकर खर्च करना उचित नहीं होगा।

प्रेम एवं वैवाहिक जीवन: पारिवारिक सहयोग बढ़ाने के लिए एक-दूसरे की भावनाओं को समझना आवश्यक होगा। अविवाहित जातकों के लिए परिवार या परिचितों के माध्यम से संबंधों की चर्चा आगे बढ़ सकती है।

शिक्षा एवं प्रतियोगिता: संचार, लेखन, वाणिज्य और व्यावसायिक प्रशिक्षण से जुड़े विद्यार्थियों को अपने कौशल विकसित करने का अवसर मिल सकता है।

स्वास्थ्य: तनाव और अनियमित खानपान से बचें। नियमित दिनचर्या बनाए रखना लाभकारी होगा।

ग्रहों का विशेष प्रभाव: गुरु का सिंह राशि में गोचर घर, परिवार और संपत्ति संबंधी मामलों को महत्व दे सकता है। जनवरी से जून तक कर्क राशि में गुरु संचार, प्रयास और कौशल विकास पर ध्यान बढ़ा सकता है। शनि का जून में मेष राशि में प्रवेश खर्च, एकांत और अधूरे कार्यों की समीक्षा का समय ला सकता है। अक्टूबर में शनि के मीन में लौटने से मित्रों, सामाजिक संपर्कों और दीर्घकालीन लक्ष्यों से जुड़ी योजनाओं पर पुनर्विचार संभव है।

राहु का मकर और केतु का कर्क में गोचर उच्च शिक्षा, दूरस्थ यात्राओं, विचारधारा और व्यक्तिगत प्रयासों से जुड़े विषयों को सक्रिय कर सकता है।

वर्ष का संदेश: धन का प्रबंधन करें, संबंधों में स्थिरता रखें और भविष्य के लिए मजबूत आधार तैयार करें।

शुभ रंग: पिस्ता हरा, हल्का गुलाबी, क्रीम।

मिथुन राशि

वार्षिक संकेत: ज्ञान, संचार, आर्थिक समझ और नई संभावनाएँ।

मिथुन राशि के जातकों के लिए यह वर्ष सीखने, अपने विचारों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने और करियर में नए रास्ते खोजने का अवसर प्रदान कर सकता है। हालांकि, अनेक विकल्पों के बीच सही निर्णय लेना आवश्यक होगा।

करियर एवं व्यवसाय: नवंबर 2026 से जनवरी 2027 तक पुराने संपर्कों या अधूरे प्रस्तावों पर दोबारा काम करने का अवसर मिल सकता है। जनवरी से जून 2027 तक धन, कौशल और संचार से संबंधित कार्यों पर ध्यान बढ़ सकता है। जून के बाद नेटवर्किंग, समूहों और व्यावसायिक संपर्कों से नए अवसर मिलने की संभावना बन सकती है।



नौकरी बदलने की इच्छा रखने वाले जातकों को केवल आकर्षक वेतन के आधार पर निर्णय नहीं लेना चाहिए। काम की स्थिरता, जिम्मेदारियों और भविष्य की संभावनाओं की भी समीक्षा करें।

धन एवं आर्थिक स्थिति: आय बढ़ाने के नए विचार सामने आ सकते हैं। अतिरिक्त कौशल के माध्यम से कमाई के अवसर तलाशे जा सकते हैं। हालांकि, अनावश्यक खरीदारी और बिना पर्याप्त जानकारी के निवेश से बचना उचित होगा।

प्रेम एवं वैवाहिक जीवन: बातचीत और पारस्परिक समझ संबंधों को मजबूत बनाएगी। छोटी बातों को बढ़ाने के बजाय स्पष्ट संवाद से समाधान निकालें। अविवाहित जातकों के लिए सामाजिक संपर्कों के माध्यम से नए परिचय संभव हैं।

शिक्षा एवं प्रतियोगिता: विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष अध्ययन, लेखन, संचार, तकनीकी कौशल और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिहाज से उपयोगी हो सकता है।

स्वास्थ्य: मानसिक व्यस्तता और एक साथ कई काम करने की आदत थकान बढ़ा सकती है। नियमित विश्राम और शारीरिक गतिविधि पर ध्यान दें।

ग्रहों का विशेष प्रभाव: गुरु का सिंह राशि में गोचर संचार, लेखन, छोटी यात्राओं और साहस को बढ़ावा दे सकता है। जनवरी से जून तक कर्क राशि में गुरु धन और पारिवारिक मूल्यों पर ध्यान बढ़ा सकता है। शनि का मेष राशि में प्रवेश मित्रों, समूहों और दीर्घकालीन लक्ष्यों के प्रति जिम्मेदारी बढ़ा सकता है। अक्टूबर में शनि की मीन राशि में वापसी करियर संबंधी योजनाओं की समीक्षा करा सकती है।

राहु का मकर और केतु का कर्क में गोचर साझा धन, ऋण, निवेश, पारिवारिक आर्थिक मामलों और व्यक्तिगत सुरक्षा से जुड़े विषयों पर सोच-विचार बढ़ा सकता है।

वर्ष का संदेश: अपनी बुद्धि और संचार क्षमता का उपयोग करें, लेकिन निर्णय लेने से पहले तथ्यों की जाँच अवश्य करें।

शुभ रंग: ऑफ वाइट, रंग बिरंगा, पन्ना हरा, हल्का पीला, हल्का हरा।

कर्क राशि

वार्षिक संकेत: आत्मविश्वास, आर्थिक पुनर्गठन और व्यक्तिगत विकास।

कर्क राशि के जातकों के लिए यह वर्ष विशेष महत्व रखता है, क्योंकि गुरु जनवरी 2027 में वक्री होकर आपकी राशि में लौटेगा और अप्रैल में मार्गी होगा। इसके बाद जून में गुरु सिंह राशि में प्रवेश करेगा। इस क्रम के कारण व्यक्तिगत विकास, आर्थिक मामलों और आत्ममूल्यांकन पर विशेष ध्यान रह सकता है।

करियर एवं व्यवसाय: नवंबर 2026 से जनवरी 2027 तक कार्यक्षेत्र में अपने लक्ष्यों को स्पष्ट करना आवश्यक होगा। जनवरी से अप्रैल 2027 के बीच पुराने निर्णयों, जिम्मेदारियों और योजनाओं पर पुनर्विचार करने का अवसर मिल सकता है। अप्रैल के बाद आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा मिल सकती है।

जून के बाद आर्थिक स्थिरता, पारिश्रमिक और अपने कौशल का उचित मूल्य प्राप्त करने जैसे विषय अधिक महत्वपूर्ण हो सकते हैं।

धन एवं आर्थिक स्थिति: गुरु की आपकी राशि में वापसी व्यक्तिगत विकास और भविष्य की दिशा पर ध्यान बढ़ा सकती है। जून के बाद आय, बचत और परिवार से जुड़े आर्थिक निर्णय महत्वपूर्ण हो सकते हैं। राहु के मकर राशि में आने से साझेदारी और संयुक्त निर्णयों में सावधानी आवश्यक होगी।

राशिफल

प्रेम एवं वैवाहिक जीवन: संबंधों में भावनात्मक सुरक्षा और विश्वास की आवश्यकता बढ़ सकती है। साथी की अपेक्षाओं को समझना और अपनी भावनाएँ स्पष्ट करना उपयोगी होगा। अविवाहित जातकों के लिए संबंधों को गंभीरता से समझने का समय हो सकता है।

शिक्षा एवं प्रतियोगिता: पढ़ाई में एकाग्रता और नियमितता बनाए रखना लाभकारी रहेगा। पुराने विषयों की पुनरावृत्ति और कमजोरियों को दूर करने से प्रगति संभव है।

स्वास्थ्य: मानसिक तनाव और भावनात्मक थकान को अनदेखा न करें। पर्याप्त नींद, संतुलित आहार और नियमित शारीरिक गतिविधि अपनाएँ।

ग्रहों का विशेष प्रभाव: जनवरी से जून 2027 तक गुरु का आपकी राशि में रहना व्यक्तिगत विकास, आत्मविश्वास और जीवन की दिशा पर पुनर्विचार का अवसर प्रदान कर सकता है। जून के बाद गुरु का सिंह में जाना धन और पारिवारिक मामलों पर ध्यान बढ़ा सकता है।

शनि का मेष राशि में प्रवेश करियर और सार्वजनिक जिम्मेदारियों को अधिक गंभीर बना सकता है। अक्टूबर में शनि की मीन राशि में वापसी उच्च शिक्षा, यात्रा और दीर्घकालीन योजनाओं की समीक्षा करा सकती है। राहु का मकर और केतु का कर्क में गोचर साझेदारी तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बीच संतुलन की आवश्यकता दर्शाता है।

वर्ष का संदेश: अपनी क्षमताओं पर विश्वास रखें और भावनात्मक निर्णयों के साथ व्यावहारिक सोच भी बनाए रखें।

शुभ रंग: मोती जैसा सफ़ेद, क्रीम, हल्का सिल्वर।

सिंह राशि

वार्षिक संकेत: आत्मविश्वास, पहचान, जिम्मेदारी और आत्ममंथन।

सिंह राशि के जातकों के लिए यह वर्ष विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो सकता है, क्योंकि गुरु अक्टूबर 2026 के अंत में आपकी राशि में प्रवेश करेगा, दिसंबर में वक्री होगा और जनवरी 2027 में वापस कर्क राशि में चला जाएगा। जून 2027 में गुरु पुनः आपकी राशि में आएगा।

इस कारण वर्ष के पहले भाग में कुछ योजनाओं की समीक्षा और दूसरे भाग में आगे बढ़ने की प्रेरणा मिल सकती है।

करियर एवं व्यवसाय: नवंबर 2026 से जनवरी 2027 तक नेतृत्व, पद, पहचान और नई जिम्मेदारियों से जुड़े अवसर सामने आ सकते हैं। गुरु की वक्री गति के दौरान पुराने प्रस्तावों या योजनाओं में संशोधन करना पड़ सकता है। जून के बाद अपने काम को सामने लाने और नई भूमिका स्वीकार करने की प्रेरणा बढ़ सकती है।

हालांकि, केवल प्रतिष्ठा या उत्साह के आधार पर बड़े निर्णय लेने से बचना चाहिए। अपनी क्षमता और उपलब्ध संसाधनों का आकलन करें।

धन एवं आर्थिक स्थिति: आय बढ़ाने की योजनाएँ बन सकती हैं, लेकिन निजी खर्चों और जीवनशैली पर होने वाले व्यय को नियंत्रित रखना आवश्यक होगा। जनवरी से जून के बीच बचत और आर्थिक सुरक्षा की समीक्षा उपयोगी हो सकती है।

प्रेम एवं वैवाहिक जीवन: आकर्षण और आत्मविश्वास बढ़ सकता है, लेकिन संबंधों में अहंकार से बचना होगा। साथी की बात सुनना और भावनाओं को समझना संबंधों को मजबूत बनाएगा।

शिक्षा एवं प्रतियोगिता: रचनात्मक विषयों, नेतृत्व, प्रबंधन और प्रदर्शन से संबंधित क्षेत्रों में रुचि बढ़ सकती है। अपनी प्रतिभा को विकसित करने के लिए निरंतर अभ्यास करें।

स्वास्थ्य: व्यस्तता के बीच विश्राम के लिए समय निकालें। नियमित दिनचर्या और तनाव प्रबंधन पर ध्यान दें।

ग्रहों का विशेष प्रभाव: गुरु का सिंह राशि में प्रवेश आत्मविश्वास और विस्तार की इच्छा को बढ़ा सकता है। जनवरी से जून तक कर्क राशि में गुरु का लौटना पुराने कार्यों और निजी प्राथमिकताओं पर ध्यान केंद्रित करा सकता है। जून के बाद गुरु की वापसी नई योजनाओं को आगे बढ़ाने का अवसर दे सकती है।

शनि का मेष राशि में प्रवेश उच्च शिक्षा, दूरस्थ यात्राओं और वैचारिक दृष्टिकोण से जुड़े मामलों में जिम्मेदारी बढ़ा सकता है। अक्टूबर में शनि के मीन में लौटने से साझा धन, ऋण और आर्थिक प्रतिबद्धताओं की समीक्षा आवश्यक हो सकती है।

राहु का मकर और केतु का कर्क में गोचर कामकाज, दिनचर्या, स्वास्थ्य संबंधी आदतों और विश्राम के बीच संतुलन बनाने का संकेत देता है।

वर्ष का संदेश: अपनी प्रतिभा को पहचानें, लेकिन सफलता के साथ विनम्रता और अनुशासन बनाए रखें।

शुभ रंग: सुनहरा, केसरिया, हल्का नारंगी

कन्या राशि

वार्षिक संकेत: योजनाओं की समीक्षा, मानसिक स्पष्टता और दीर्घकालीन तैयारी।

कन्या राशि के जातकों के लिए यह वर्ष पुराने कार्यों को व्यवस्थित करने, भविष्य की योजनाओं पर गंभीरता से विचार करने और व्यक्तिगत जीवन में संतुलन बनाने का अवसर हो सकता है।

वर्ष के अंतिम भाग में गुरु के आपकी राशि में प्रवेश से नई संभावनाओं और व्यक्तिगत विकास पर ध्यान बढ़ सकता है।

करियर एवं व्यवसाय: नवंबर 2026 से जनवरी 2027 के बीच कार्यक्षेत्र में पर्दे के पीछे की तैयारी और पुराने मामलों को सुलझाने पर ध्यान देना उपयोगी होगा। जनवरी से जून 2027 तक सामाजिक संपर्कों, टीमवर्क और दीर्घकालीन लक्ष्यों के संबंध में नई संभावनाएँ सामने आ सकती हैं।

जून के बाद अधूरे कार्यों को पूरा करने, खर्चों की समीक्षा करने और नई योजनाओं के लिए तैयारी करने की आवश्यकता हो सकती है। नवंबर के अंत में गुरु का कन्या राशि में प्रवेश आत्मविश्वास और व्यक्तिगत विकास को प्रोत्साहित कर सकता है।

धन एवं आर्थिक स्थिति: आय और खर्चों के बीच संतुलन बनाए रखना महत्वपूर्ण होगा। मित्रों या परिचितों के साथ आर्थिक लेन-देन करते समय स्पष्ट शर्तें तय करें। बड़े निवेश से पहले पर्याप्त जानकारी प्राप्त करें।

प्रेम एवं वैवाहिक जीवन: संबंधों में स्पष्टता और विश्वास आवश्यक रहेगा। अविवाहित जातकों के लिए नए परिचय संभव हैं, लेकिन संबंधों के भविष्य के बारे में जल्दबाजी में निर्णय न लें।

शिक्षा एवं प्रतियोगिता: शोध, विश्लेषण, लेखन और तकनीकी विषयों से जुड़े विद्यार्थियों को व्यवस्थित अध्ययन से लाभ मिल सकता है। वर्ष के अंतिम भाग में पढ़ाई के लिए नई प्रेरणा मिल सकती है।

स्वास्थ्य: काम और विश्राम के बीच संतुलन रखें। अनियमित दिनचर्या से बचना और तनाव कम करना उपयोगी होगा।

ग्रहों का विशेष प्रभाव: गुरु का सिंह राशि में गोचर खर्च, विश्राम और आंतरिक तैयारी से जुड़े विषयों को सक्रिय कर सकता है। जनवरी से जून तक कर्क राशि में गुरु मित्रों, सामाजिक संपर्कों और दीर्घकालीन लक्ष्यों को महत्व दे सकता है। जून के बाद सिंह राशि में गुरु का पुनः प्रवेश निजी प्राथमिकताओं पर ध्यान बढ़ा सकता है। नवंबर के अंत में गुरु के आपकी राशि में आने से व्यक्तिगत विकास और नई योजनाओं को बल मिल सकता है।

शनि का मेष राशि में प्रवेश साझा धन, ऋण और जिम्मेदारियों के प्रति गंभीर दृष्टिकोण की आवश्यकता दर्शाता है। अक्टूबर में शनि के मीन में लौटने से साझेदारी और वैवाहिक जीवन की जिम्मेदारियों की समीक्षा संभव है।

राहु का मकर और केतु का कर्क में गोचर रचनात्मकता, प्रेम, संतान, मित्रता और दीर्घकालीन आकांक्षाओं से जुड़े विषयों को सक्रिय कर सकता है।
वर्ष का संदेश: अपनी योजनाओं को व्यवस्थित करें और सही समय आने पर आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ें।
शुभ रंग: रंग बिरंगा, ओलिव ग्रीन, पिस्ता हरा, हल्का पीला।

तुला राशि



वार्षिक संकेत: सामाजिक विस्तार, करियर की दिशा और संबंधों में संतुलन।
तुला राशि के जातकों के लिए यह वर्ष सामाजिक संपर्कों, पेशेवर पहचान और व्यक्तिगत संबंधों के बीच संतुलन बनाने का अवसर प्रदान कर सकता है। कई मामलों में सफलता सहयोग और दीर्घकालीन योजना पर निर्भर रहेगी।
करियर एवं व्यवसाय: वर्ष के शुरुआती महीनों में नए संपर्क, समूहों और पेशेवर सहयोग के माध्यम से अवसर मिल सकते हैं। जनवरी से जून 2027 के बीच करियर में प्रगति और अपनी क्षमताओं को प्रदर्शित करने के लिए प्रयास बढ़ाए जा सकते हैं।
जून के बाद वरिष्ठ अधिकारियों, ग्राहकों और सार्वजनिक जिम्मेदारियों से जुड़े मामलों में सावधानी और अनुशासन आवश्यक होगा। अक्टूबर में शनि की मीन राशि में वापसी से कामकाज, सहकर्मियों और दैनिक जिम्मेदारियों की समीक्षा करनी पड़ सकती है।
धन एवं आर्थिक स्थिति: आय के नए स्रोत तलाशने का अवसर मिल सकता है। हालांकि, सामाजिक प्रतिष्ठा या जीवनशैली पर अनावश्यक खर्च करने से बचना चाहिए। दीर्घकालीन बचत और आर्थिक सुरक्षा को प्राथमिकता दें।
प्रेम एवं वैवाहिक जीवन: संबंधों में सहयोग और समझ बढ़ाने का अवसर मिल सकता है। जून के बाद काम की जिम्मेदारियों के कारण निजी जीवन प्रभावित न हो, इसका ध्यान रखना होगा। किसी भी मतभेद को बातचीत से सुलझाने का प्रयास करें।
शिक्षा एवं प्रतियोगिता: प्रबंधन, कला, डिजाइन, कानून और संचार जैसे क्षेत्रों से जुड़े विद्यार्थियों को अपनी क्षमताओं को विकसित करने के अवसर मिल सकते हैं।
स्वास्थ्य: अत्यधिक काम और अनियमित दिनचर्या से बचें। नियमित व्यायाम और पर्याप्त विश्राम लाभकारी होंगे।
ग्रहों का विशेष प्रभाव: गुरु का सिंह राशि में गोचर सामाजिक संपर्कों, मित्रों और दीर्घकालीन योजनाओं को सक्रिय कर सकता है। जनवरी से जून तक कर्क राशि में गुरु करियर और प्रतिष्ठा से जुड़े विषयों पर ध्यान बढ़ा सकता है। जून के बाद सिंह राशि में गुरु का पुनः प्रवेश मित्रों और सहयोगियों के माध्यम से अवसर प्रदान कर सकता है।
शनि का मेष राशि में प्रवेश साझेदारी, विवाह और व्यावसायिक अनुबंधों को अधिक गंभीरता से लेने का संकेत देता है। अक्टूबर में शनि के मीन में लौटने से कार्यभार और दैनिक दिनचर्या की समीक्षा आवश्यक हो सकती है।
राहु का मकर और केतु का कर्क में गोचर घर-परिवार तथा करियर के बीच संतुलन बनाने की आवश्यकता दर्शाता है।
वर्ष का संदेश: सहयोग को अपनी शक्ति बनाएँ और सफलता के लिए निरंतरता तथा संतुलन पर ध्यान दें।
शुभ रंग: पेस्टल ब्लू, हल्का गुलाबी, क्रीम।

वृश्चिक राशि

वार्षिक संकेत: करियर में नई संभावनाएँ, ज्ञान का विस्तार और जिम्मेदारियों की परीक्षा।
वृश्चिक राशि के जातकों के लिए यह वर्ष पेशेवर विकास, उच्च शिक्षा और भविष्य की योजनाओं के लिए महत्त्वपूर्ण हो सकता है। पुराने अनुभवों से सीखकर आगे बढ़ना लाभकारी रहेगा।
करियर एवं व्यवसाय: नवंबर 2026 से जनवरी 2027 के बीच कार्यक्षेत्र में पहचान और जिम्मेदारियों से जुड़े अवसर मिल सकते हैं। जनवरी से जून 2027 तक उच्च शिक्षा, प्रशिक्षण, दूरस्थ संपर्क और नए कौशल से जुड़े विषय महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं।
जून के बाद कामकाज में विस्तार की इच्छा बढ़ सकती है, लेकिन किसी नई योजना को लागू करने से पहले उसके व्यावहारिक पक्ष की जाँच करें। अक्टूबर में शनि की मीन राशि में वापसी रचनात्मक परियोजनाओं और अधूरे कार्यों की समीक्षा करा सकती है।
धन एवं आर्थिक स्थिति: करियर और कौशल विकास से संबंधित प्रयास भविष्य में आर्थिक अवसरों का आधार बन सकते हैं। बड़े खर्चों, ऋण और निवेश संबंधी निर्णयों में सावधानी रखें।
प्रेम एवं वैवाहिक जीवन: संबंधों में भावनात्मक गहराई बढ़ सकती है। हालांकि, अत्यधिक अपेक्षाएँ या संदेह गलतफहमियाँ पैदा कर सकते हैं। खुलकर बातचीत करना आवश्यक होगा।
शिक्षा एवं प्रतियोगिता: उच्च शिक्षा, शोध, तकनीकी अध्ययन और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों के लिए अनुशासन महत्त्वपूर्ण रहेगा। निरंतर अभ्यास से प्रगति संभव है।
स्वास्थ्य: मानसिक तनाव और काम के दबाव को नियंत्रित रखने की आवश्यकता होगी। नियमित दिनचर्या और पर्याप्त विश्राम पर ध्यान दें।
ग्रहों का विशेष प्रभाव: गुरु का सिंह राशि में गोचर करियर, प्रतिष्ठा और सामाजिक पहचान से जुड़े विषयों को सक्रिय कर सकता है। जनवरी से जून तक कर्क राशि में गुरु उच्च शिक्षा, यात्रा और ज्ञान के विस्तार को प्रोत्साहित कर सकता है। जून के बाद गुरु का पुनः सिंह में प्रवेश करियर की योजनाओं पर ध्यान बढ़ा सकता है।
शनि का मेष राशि में प्रवेश कार्यभार और दैनिक जिम्मेदारियों को बढ़ा सकता है। अक्टूबर में शनि की मीन राशि में वापसी रचनात्मक कार्यों, शिक्षा और संतान से संबंधित जिम्मेदारियों की समीक्षा का संकेत देती है।
राहु का मकर और केतु का कर्क में गोचर संचार, प्रयास, यात्राओं और उच्च शिक्षा से जुड़े विषयों को सक्रिय कर सकता है।
वर्ष का संदेश: अपने अनुभव और कौशल को मजबूत करें तथा अवसरों का उपयोग सोच-समझकर करें।
शुभ रंग: गहरा लाल, मरून, बरगंडी ।

धनु राशि

वार्षिक संकेत: ज्ञान, आर्थिक पुनर्गठन और व्यक्तिगत परिवर्तन।

धनु राशि के जातकों के लिए यह वर्ष शिक्षा, आर्थिक मामलों और व्यक्तिगत विकास की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हो सकता है। कुछ पुरानी योजनाओं में संशोधन की आवश्यकता पड़ सकती है, लेकिन धैर्यपूर्वक काम करने से नई दिशा मिल सकती है।

करियर एवं व्यवसाय: नवंबर 2026 से जनवरी 2027 के बीच साझेदारी, नए अनुबंधों और सहयोग से जुड़े अवसरों पर विचार किया जा सकता है।



जनवरी से जून 2027 के बीच साझा संसाधनों, निवेश, प्रशिक्षण और गहन अध्ययन जैसे विषय महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं।

जून के बाद उच्च शिक्षा, लंबी यात्राओं और नए अनुभवों से संबंधित योजनाओं पर काम करने की प्रेरणा मिल सकती है। अक्टूबर में शनि के मीन राशि में लौटने से घर-परिवार और कार्यक्षेत्र की जिम्मेदारियों में संतुलन बनाने की आवश्यकता हो सकती है।

धन एवं आर्थिक स्थिति: आर्थिक मामलों में योजनाबद्ध दृष्टिकोण अपनाना लाभकारी रहेगा। संयुक्त निवेश, ऋण और साझेदारी से संबंधित दस्तावेजों को ध्यानपूर्वक पढ़ें। जोखिम उठाने से पहले अपनी आर्थिक क्षमता का आकलन करें।

प्रेम एवं वैवाहिक जीवन: संबंधों में विश्वास और स्पष्टता महत्त्वपूर्ण रहेंगे। किसी पुराने मतभेद पर दोबारा चर्चा हो सकती है। एक-दूसरे की अपेक्षाओं को समझने से संबंध बेहतर बनाए जा सकते हैं।

शिक्षा एवं प्रतियोगिता: उच्च शिक्षा, शोध, दर्शन, कानून और ज्ञानवर्धक विषयों में रुचि बढ़ सकती है। नियमित अध्ययन और अनुभवी लोगों से मार्गदर्शन से लाभ मिल सकता है।

स्वास्थ्य: मानसिक तनाव को नियंत्रित रखें और दिनचर्या में पर्याप्त विश्राम शामिल करें। किसी स्वास्थ्य समस्या को नजरअंदाज न करें।

ग्रहों का विशेष प्रभाव: गुरु का सिंह राशि में गोचर उच्च शिक्षा, यात्राओं और वैचारिक विस्तार के लिए अनुकूल अवसरों का संकेत दे सकता है। जनवरी से जून तक कर्क राशि में गुरु साझा धन, निवेश और आर्थिक प्रतिबद्धताओं की समीक्षा करा सकता है।

जून के बाद गुरु का पुनः सिंह में प्रवेश ज्ञान और दीर्घकालीन योजनाओं को महत्त्व दे सकता है।

शनि का मेष राशि में प्रवेश प्रेम, संतान, शिक्षा और रचनात्मक कार्यों से संबंधित जिम्मेदारियों को बढ़ा सकता है। अक्टूबर में शनि के मीन में लौटने से घर और परिवार के मामलों पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता हो सकती है।

राहु का मकर और केतु का कर्क में गोचर धन, बचत, पारिवारिक मूल्य और साझा संसाधनों से जुड़े विषयों को सक्रिय कर सकता है।

वर्ष का संदेश: आर्थिक निर्णयों में विवेक रखें और ज्ञान को अपने विकास का आधार बनाएँ।

शुभ रंग: हल्दी पिला, सुनहरा, हल्का केसरिया।

मकर राशि

वार्षिक संकेत: साझेदारी, जिम्मेदारी और आर्थिक अनुशासन।

मकर राशि के जातकों के लिए यह वर्ष संबंधों, साझेदारी और आर्थिक नियोजन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रहेगा। राहु का आपकी राशि में प्रवेश विशेष रूप से व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाओं और जीवन की दिशा पर ध्यान बढ़ा सकता है।

करियर एवं व्यवसाय: नवंबर 2026 से जनवरी 2027 तक नए अनुबंधों, व्यावसायिक सहयोग और पेशेवर संबंधों पर ध्यान दिया जा सकता है। जनवरी से जून 2027 के बीच साझेदारी और ग्राहकों से जुड़े मामलों में पुनर्विचार संभव है।

जून के बाद साझा संसाधनों, निवेश और जिम्मेदारियों को व्यवस्थित करना आवश्यक हो सकता है। अक्टूबर में शनि की मीन राशि में वापसी से संचार, दस्तावेजों, छोटी यात्राओं और कार्य-संबंधी समझौतों की समीक्षा की आवश्यकता हो सकती है।

धन एवं आर्थिक स्थिति: राहु के मकर राशि में आने से महत्त्वाकांक्षाएँ और आर्थिक लक्ष्यों को हासिल करने की इच्छा बढ़ सकती है। हालांकि, बड़े लाभ की उम्मीद में अनावश्यक जोखिम लेना उचित नहीं होगा। बजट, बचत और ऋण प्रबंधन पर विशेष ध्यान दें।

प्रेम एवं वैवाहिक जीवन: संबंधों में जिम्मेदारी और विश्वास का महत्त्व बढ़ेगा। साथी के साथ भविष्य की योजनाओं पर चर्चा करना लाभकारी हो सकता है। अविवाहित जातकों को संबंधों में आकर्षण के साथ अनुकूलता और स्थिरता पर भी ध्यान देना चाहिए।

शिक्षा एवं प्रतियोगिता: विद्यार्थियों को अपनी पढ़ाई के लिए स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए। तकनीकी, व्यावसायिक और प्रबंधन संबंधी कौशल विकसित करना उपयोगी होगा।

स्वास्थ्य: व्यस्तता के कारण नींद और दिनचर्या प्रभावित न होने दें। नियमित व्यायाम और स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं पर समय रहते ध्यान देना आवश्यक है।

ग्रहों का विशेष प्रभाव: गुरु का सिंह राशि में गोचर साझा धन, निवेश और गहन अध्ययन से जुड़े विषयों को सक्रिय कर सकता है। जनवरी से जून तक कर्क राशि में गुरु साझेदारी और वैवाहिक संबंधों पर ध्यान बढ़ा सकता है। जून के बाद गुरु का पुनः सिंह में प्रवेश संयुक्त वित्तीय मामलों की समीक्षा का संकेत देता है।

शनि का मेष राशि में प्रवेश घर, परिवार, संपत्ति और आंतरिक स्थिरता से जुड़े विषयों को महत्त्व दे सकता है। अक्टूबर में शनि के मीन राशि में लौटने से संचार और दैनिक जिम्मेदारियों पर दोबारा ध्यान देना पड़ सकता है।

राहु का मकर राशि में प्रवेश व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाओं को तेज कर सकता है, जबकि केतु का कर्क में प्रवेश साझेदारी में स्वतंत्रता और सहयोग के बीच संतुलन की आवश्यकता दर्शाता है।

वर्ष का संदेश: अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को स्पष्ट दिशा दें और दीर्घकालीन स्थिरता को प्राथमिकता दें।

शुभ रंग: नेवी ब्लू, चारकोल ग्रे, हल्का नीला।

कुंभ राशि

वार्षिक संकेत: कार्यक्षेत्र में अनुशासन, संबंधों की समीक्षा और नई योजनाएँ।

कुंभ राशि के जातकों के लिए यह वर्ष कामकाज, व्यक्तिगत संबंधों और आर्थिक जिम्मेदारियों में संतुलन बनाने का अवसर प्रदान कर सकता है। वर्ष के दौरान कुछ योजनाओं की समीक्षा आवश्यक हो सकती है।

करियर एवं व्यवसाय: नवंबर 2026 से जनवरी 2027 तक पुराने कार्यों को पूरा करने और नए अवसरों का मूल्यांकन करने का समय हो सकता है। जनवरी से जून 2027 तक कार्यक्षेत्र, दैनिक दिनचर्या और पेशेवर जिम्मेदारियों पर ध्यान बढ़ सकता है।

जून के बाद साझेदारी, ग्राहकों और व्यावसायिक सहयोग से जुड़े विषय महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं। अक्टूबर में शनि की मीन राशि में वापसी आय, बचत और आर्थिक प्राथमिकताओं की समीक्षा करा सकती है।

धन एवं आर्थिक स्थिति: आय और खर्चों के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक होगा। अनावश्यक खरीदारी और बिना पर्याप्त जानकारी के निवेश से बचें। दीर्घकालीन वित्तीय लक्ष्यों के लिए नियमित बचत लाभकारी हो सकती है।

प्रेम एवं वैवाहिक जीवन: संबंधों में अपेक्षाओं और जिम्मेदारियों पर स्पष्ट बातचीत आवश्यक होगी। पुराने मतभेदों को सुलझाने का अवसर मिल सकता है। अविवाहित जातकों को नए संबंधों में समय लेकर निर्णय करना चाहिए।

शिक्षा एवं प्रतियोगिता: नियमित अध्ययन, समय प्रबंधन और व्यावहारिक कौशल विकसित करने पर ध्यान दें। तकनीकी और विश्लेषणात्मक विषयों में निरंतर प्रयास लाभकारी हो सकते हैं।

स्वास्थ्य: व्यस्त दिनचर्या और मानसिक दबाव को नियंत्रित रखना आवश्यक होगा। पर्याप्त नींद, संतुलित आहार और नियमित शारीरिक गतिविधि अपनाएँ।

ग्रहों का विशेष प्रभाव: गुरु का सिंह राशि में गोचर साझेदारी और वैवाहिक जीवन से जुड़े विषयों को सक्रिय कर सकता है। जनवरी से जून तक कर्क राशि में गुरु कार्यक्षेत्र, सेवा और दिनचर्या पर ध्यान बढ़ा सकता है। जून के बाद गुरु का पुनः सिंह में प्रवेश संबंधों और व्यावसायिक सहयोग को महत्त्व दे सकता है।

शनि का मेष राशि में प्रवेश संचार, छोटी यात्राओं और व्यावहारिक कौशल के विकास से जुड़ी जिम्मेदारियों को बढ़ा सकता है। अक्टूबर में शनि के मीन में लौटने से आर्थिक अनुशासन और बचत की समीक्षा आवश्यक हो सकती है।

राहु का मकर और केतु का कर्क में गोचर निजी जीवन, मानसिक विश्राम, कार्यभार और स्वास्थ्य संबंधी आदतों के बीच संतुलन बनाने की आवश्यकता दर्शाता है।

वर्ष का संदेश: योजनाओं को व्यवस्थित रखें और संबंधों तथा आर्थिक मामलों में पारदर्शिता बनाए रखें।

शुभ रंग: इलेक्ट्रिक ब्लू, नेवी ब्लू, बैंगनी ।

मीन राशि

वार्षिक संकेत: आत्मअनुशासन, व्यक्तिगत विकास और जिम्मेदारियों का पुनर्मूल्यांकन।

मीन राशि के जातकों के लिए यह वर्ष विशेष रूप से



महत्त्वपूर्ण हो सकता है, क्योंकि शनि वर्ष के अधिकांश समय आपकी राशि के आसपास अपनी स्थिति बनाए रखेगा। जून 2027 में शनि मेष राशि में जाएगा और अक्टूबर में वक्री होकर पुनः मीन राशि में लौटेगा।

इस अवधि में व्यक्तिगत जिम्मेदारियों, आर्थिक अनुशासन और जीवन की दिशा पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता हो सकती है।

करियर एवं व्यवसाय: नवंबर 2026 से जनवरी 2027 तक पुराने कार्यों को व्यवस्थित करने और भविष्य की योजनाओं को स्पष्ट करने पर ध्यान दें। जनवरी से जून 2027 के बीच रचनात्मक कार्यों, शिक्षा, संतान से संबंधित जिम्मेदारियों और व्यक्तिगत रुचियों पर ध्यान बढ़ सकता है।

जून के बाद आर्थिक प्राथमिकताओं और कार्यक्षेत्र की स्थिरता पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता हो सकती है। अक्टूबर में शनि के आपकी राशि में लौटने से व्यक्तिगत जिम्मेदारियों और पुराने निर्णयों की समीक्षा का समय मिल सकता है।

धन एवं आर्थिक स्थिति: आय, बचत और नियमित खर्चों का संतुलन बनाए रखना महत्त्वपूर्ण होगा। जून से अक्टूबर के बीच अनावश्यक खर्चों को नियंत्रित करने और वित्तीय योजनाओं की समीक्षा करने पर ध्यान दें। बिना जाँच-पड़ताल के किसी निवेश या आर्थिक प्रतिबद्धता में शामिल न हों।

प्रेम एवं वैवाहिक जीवन: भावनात्मक संवेदनशीलता बढ़ सकती है। संबंधों में अपेक्षाओं को स्पष्ट करना और व्यावहारिक समाधान तलाशना आवश्यक होगा। परिवार के साथ समय बिताना और एक-दूसरे की जिम्मेदारियों को समझना लाभकारी रहेगा।

शिक्षा एवं प्रतियोगिता: विद्यार्थियों को नियमित अध्ययन और स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित करने की आवश्यकता होगी। शोध, रचनात्मक कार्य और आध्यात्मिक अध्ययन में रुचि बढ़ सकती है।

स्वास्थ्य: काम और निजी जीवन में संतुलन बनाए रखें। पर्याप्त नींद, नियमित दिनचर्या और तनाव प्रबंधन पर ध्यान दें। स्वास्थ्य संबंधी परेशानी होने पर योग्य चिकित्सक से सलाह लें।

ग्रहों का विशेष प्रभाव: गुरु का सिंह राशि में गोचर कामकाज, दैनिक दिनचर्या और सेवा से जुड़े विषयों को सक्रिय कर सकता है। जनवरी से जून तक कर्क राशि में गुरु रचनात्मकता, प्रेम, संतान और शिक्षा पर ध्यान बढ़ा सकता है। जून के बाद गुरु का पुनः सिंह में प्रवेश कार्यक्षेत्र और नियमित जिम्मेदारियों पर ध्यान केंद्रित करा सकता है।

शनि का मीन राशि में रहना आत्ममंथन और अनुशासन की आवश्यकता दर्शाता है। जून में मेष राशि में प्रवेश आर्थिक मामलों और पारिवारिक जिम्मेदारियों पर ध्यान बढ़ा सकता है। अक्टूबर में शनि के मीन में लौटने से पुराने निर्णयों और व्यक्तिगत प्राथमिकताओं की समीक्षा करनी पड़ सकती है।

राहु का मकर और केतु का कर्क में गोचर सामाजिक संपर्कों, दीर्घकालीन लक्ष्यों, रचनात्मकता और व्यक्तिगत प्राथमिकताओं से जुड़े विषयों को सक्रिय कर सकता है।

वर्ष का संदेश: धैर्य, अनुशासन और व्यावहारिक सोच के साथ आगे बढ़ें। निरंतर प्रयास से जीवन में स्थिरता लाने की दिशा में प्रगति संभव है।

शुभ रंग: हल्दी पिला, सी ग्रीन, आसमानी ।

पश्चिम बंगाल में परिवर्तन की नई दस्तक : विकास, विश्वास और सुशासन की ओर बढ़ते कदम

इतिहास जब करवट बदलता है तो उसके संकेत केवल सत्ता परिवर्तन तक सीमित नहीं रहते, बल्कि समाज की आकांक्षाओं, अर्थव्यवस्था की दिशा और शासन की प्राथमिकताओं में भी दिखाई देने लगते हैं। पश्चिम बंगाल आज ऐसे ही एक ऐतिहासिक संक्रमण के दौर से गुजर रहा है। कभी देश के औद्योगिक विकास का अग्रणी केंद्र रहा बंगाल लंबे समय से राजनीतिक अस्थिरता, उद्योगों के पलायन, बेरोजगारी, प्रशासनिक जटिलताओं और कानून-व्यवस्था से जुड़ी चुनौतियों के कारण अपनी संभावनाओं के अनुरूप आगे नहीं बढ़ पाया। लेकिन मुख्यमंत्री सुवेंदु अधिकारी के नेतृत्व में मई 2026 में गठित नई सरकार के साथ राज्य में परिवर्तन की एक नई उम्मीद ने जन्म लिया है। यह परिवर्तन कितना व्यापक और स्थायी होगा, इसका निर्णय आने वाला समय करेगा, लेकिन इतना स्पष्ट है कि बंगाल में विकास, निवेश और सुशासन को लेकर एक नई बहस शुरू हुई है।

बंगाल की धरती केवल राजनीतिक आंदोलनों की साक्षी नहीं रही, बल्कि उसने भारतीय पुनर्जागरण, साहित्य, संस्कृति, शिक्षा, विज्ञान और औद्योगिक चेतना को भी नई ऊंचाइयां दी हैं। रवींद्रनाथ टैगोर, स्वामी विवेकानंद, नेताजी सुभाषचंद्र बोस और डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की विचारभूमि वाला यह प्रदेश अपनी ऐतिहासिक गरिमा के अनुरूप फिर से राष्ट्रीय विकास की मुख्यधारा में प्रतिष्ठित हो, यही आज की सबसे बड़ी अपेक्षा है। किसी प्रदेश का भाग्य केवल उसके अतीत की उपलब्धियों से नहीं, बल्कि वर्तमान नेतृत्व की दूरदृष्टि और भविष्य के लिए किए गए संकल्पों से निर्धारित होता है।

औद्योगिक पुनर्जागरण : बंगाल की खोई हुई पहचान की तलाश

पश्चिम बंगाल के सामने सबसे बड़ी चुनौती औद्योगिक विकास को पुनर्जीवित करना और निवेशकों का विश्वास वापस हासिल करना है। कभी कोलकाता देश के प्रमुख औद्योगिक एवं व्यापारिक केंद्रों में गिना जाता था। जूट उद्योग, इस्पात, इंजीनियरिंग, चाय, पेट्रोकेमिकल और बंदरगाह आधारित व्यापार ने राज्य की अर्थव्यवस्था को विशिष्ट पहचान दी थी। लेकिन समय के साथ औद्योगिक गतिविधियों में आई गिरावट ने रोजगार के अवसरों को सीमित किया और प्रतिभाशाली युवाओं को दूसरे राज्यों की ओर पलायन करने के लिए विवश किया।



मुख्यमंत्री सुवेंदु अधिकारी सरकार द्वारा नई औद्योगिक नीति तैयार करना इसी संदर्भ में महत्वपूर्ण कदम है। 28 अक्टूबर को राज्य मंत्रिमंडल ने इसके प्रारूप को मंजूरी दी और 5 नवंबर को औपचारिक घोषणा प्रस्तावित है। इसका उद्देश्य निवेश की राह में आने वाली प्रशासनिक बाधाओं को कम करना, स्वीकृति प्रक्रियाओं को सरल बनाना और उद्योगों के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करना है। बिजली शुल्क में राहत, ऋण पर ब्याज सहायता और कर्मचारियों के भविष्य निधि योगदान की प्रतिपूर्ति जैसे प्रोत्साहनों पर विचार निवेशकों को आकर्षित करने की दिशा में सकारात्मक संकेत हैं।

नई नीति की वास्तविक सफलता इस बात से तय होगी कि कितने नए उद्योग स्थापित होते हैं, कितने पुराने उद्योग पुनर्जीवित होते हैं और कितने स्थानीय युवाओं को रोजगार मिलता है। केवल निवेश प्रस्तावों और समझौता ज्ञापनों से विकास का आकलन नहीं किया जा सकता। निवेश को जमीन पर उतरना होगा और रोजगार को आम परिवारों के जीवन में दिखाई देना होगा।

विशेष रूप से सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों को प्रोत्साहन देना आवश्यक है। यही वे उद्यम हैं जो छोटे नगरों, कस्बों और ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार की असंख्य संभावनाएं पैदा करते हैं। जूट, वस्त्र, खाद्य प्रसंस्करण, हस्तशिल्प और पारंपरिक उद्योगों के साथ कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सेमीकंडक्टर, डेटा सेंटर और आधुनिक प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में निवेश बंगाल की अर्थव्यवस्था को नई दिशा दे सकता है। परंपरा और तकनीक का यह समन्वय ही आधुनिक बंगाल की नई पहचान बन सकता है।

बुनियादी ढांचा : विकास की गति का नया आधार आर्थिक विकास की राह मजबूत सड़कों, रेल संपर्क, बंदरगाहों और हवाई सेवाओं से होकर गुजरती है। हल्दिया बंदरगाह की क्षमता का विस्तार, डानकुनी में माल परिवहन एवं बहु-माध्यमीय लॉजिस्टिक्स सुविधाओं का विकास और हल्दीबाड़ी-चिल्लाहाटी रेल संपर्क जैसे प्रयास बंगाल को पूर्वोत्तर भारत, बांग्लादेश और अंतरराष्ट्रीय व्यापार के लिए महत्वपूर्ण केंद्र बना सकते हैं।

उत्तर बंगाल की भौगोलिक और आर्थिक संभावनाओं को भी नए सिरे से समझने की जरूरत है। सिलीगुड़ी केवल एक शहर नहीं, बल्कि पूर्वोत्तर भारत का प्रवेश द्वार है। यहां सूचना प्रौद्योगिकी, पर्यटन, शिक्षा और व्यापार से जुड़े निवेश को प्रोत्साहित करने से पूरे क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को गति मिल सकती है। पुरुलिया, मालदा, बालूरघाट और कूचबिहार जैसे क्षेत्रों में हवाई संपर्क बढ़ाने की योजनाएं भी क्षेत्रीय असमानता कम करने में सहायक हो सकती हैं।



ललित गर्ग
वरिष्ठ लेखक

विकास का अर्थ केवल महानगरों को चमकाना नहीं, बल्कि उन दूरस्थ क्षेत्रों तक अवसर पहुंचाना है जहां आज भी बुनियादी सुविधाओं का अभाव है। जब गांवों को

बाजार, किसानों को मंडी और युवाओं को रोजगार से जोड़ने वाली सड़कें बनती हैं, तभी विकास का वास्तविक अर्थ सामने आता है।

जनकल्याण : सत्ता का मूल्यांकन आम आदमी के जीवन से

किसी भी सरकार की लोकप्रियता का स्थायी आधार उसकी जनकल्याणकारी नीतियां होती हैं। बंगाल की नई सरकार ने किसानों, युवाओं और कर्मचारियों से जुड़े विषयों को प्राथमिकता देने के संकेत दिए हैं। मुख्यमंत्री कृषक सम्मान निधि के माध्यम से किसानों को अतिरिक्त आर्थिक सहायता देने की पहल महत्वपूर्ण है। 5 नवंबर को प्रस्तावित वित्तीय हस्तांतरण के तहत पात्र किसानों को राज्य सहायता देने की घोषणा की गई है। यह कदम किसानों की आर्थिक सुरक्षा और कृषि गतिविधियों को प्रोत्साहित करने में उपयोगी हो सकता है।



कृषि केवल उत्पादन का माध्यम नहीं, बल्कि करोड़ों परिवारों की आजीविका का आधार है। किसानों को समय पर आर्थिक सहायता, आधुनिक तकनीक, सिंचाई, भंडारण और उपज का उचित मूल्य मिले तो ग्रामीण अर्थव्यवस्था में व्यापक परिवर्तन संभव है।

युवाओं के लिए रोजगार और कौशल विकास की योजनाएं भी विशेष महत्व रखती हैं। बंगाल की युवा आबादी राज्य की सबसे बड़ी पूंजी है। बंगाल युवा साथी जैसी सहायता योजनाओं के साथ कौशल प्रशिक्षण, उद्यमिता और उद्योगों से प्रत्यक्ष रोजगार संबंध स्थापित करना आवश्यक है। युवाओं को केवल आर्थिक सहायता देना पर्याप्त नहीं, उन्हें अपने पैरों पर खड़े होने का अवसर देना अधिक महत्वपूर्ण है। सरकारी कर्मचारियों की आर्थिक अपेक्षाओं, महंगाई भत्ते और सामाजिक सुरक्षा के प्रश्नों का समाधान भी सुशासन का हिस्सा है। सरकार और कर्मचारियों के बीच विश्वास का वातावरण प्रशासनिक कार्यक्षमता को बेहतर बनाता है।

कानून का राज : निवेश और सामाजिक शांति की अनिवार्य शर्त

किसी प्रदेश में विकास की इमारत तभी खड़ी हो सकती है जब उसकी नींव कानून-व्यवस्था की मजबूती पर आधारित हो। बंगाल में राजनीतिक हिंसा, जबरन वसूली, भूमि कब्जाने, स्थानीय सिंडिकेट और संगठित अपराध जैसी समस्याओं को लेकर लंबे समय से चिंताएं व्यक्त होती रही हैं। इन चुनौतियों का समाधान केवल पुलिस की सक्रियता से नहीं, बल्कि निष्पक्ष प्रशासन और मजबूत न्यायिक व्यवस्था से संभव है।

नई सरकार ने असामाजिक गतिविधियों और संगठित अपराध पर अंकुश लगाने के लिए पश्चिम बंगाल पब्लिक सेफ्टी एंड कंट्रोल ऑफ एंटी-सोशल एक्टिविटीज विधेयक, 2026 तथा सार्वजनिक व्यवस्था से संबंधित संशोधन के माध्यम से कठोर प्रावधानों की पहल की है। सार्वजनिक अथवा निजी संपत्ति को नुकसान पहुंचाने वालों से क्षतिपूर्ति वसूलने की व्यवस्था भी इसी दिशा में महत्वपूर्ण है।

हालांकि कठोर कानून बनाना और उनका न्यायसंगत क्रियान्वयन दो अलग-अलग बातें हैं। निवारक हिरासत और प्रशासनिक अधिकारों के प्रयोग में संविधान, नागरिक स्वतंत्रता और प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों की रक्षा अनिवार्य है। अपराधी को संरक्षण नहीं मिलना चाहिए, लेकिन निर्दोष नागरिक को भी प्रशासनिक मनमानी का शिकार नहीं होना चाहिए। कानून का भय अपराधियों में और कानून पर विश्वास आम नागरिकों में होना चाहिए।

शिक्षा और चिकित्सा : विकसित बंगाल की असली कसौटी

बंगाल की ऐतिहासिक पहचान शिक्षा और बौद्धिक चेतना से रही है। आज आवश्यकता है कि इस गौरव को आधुनिक शैक्षणिक संस्थानों, अनुसंधान केंद्रों, तकनीकी शिक्षा और कौशल विकास के माध्यम से नई ऊंचाइयां दी जाएं। आईआईटी, आईआईएम और एम्स जैसी संस्थाओं के विस्तार एवं विकास से जुड़ी संभावनाओं के साथ राज्य के विश्वविद्यालयों और विद्यालयों की गुणवत्ता सुधारना भी उतना ही जरूरी है।

चिकित्सा के क्षेत्र में आधुनिक अस्पताल, ग्रामीण स्वास्थ्य केंद्र, चिकित्सकों की उपलब्धता और सस्ती दवाओं की व्यवस्था आम जनता के जीवन में प्रत्यक्ष परिवर्तन ला सकती है। शिक्षा और चिकित्सा ऐसी बुनियादी आवश्यकताएं हैं जिनमें किसी भी प्रकार की उपेक्षा सामाजिक असमानता को बढ़ाती है।

बंगाल को ऐसा वातावरण बनाना होगा जहां प्रतिभाशाली विद्यार्थी शिक्षा के लिए दूसरे राज्यों पर निर्भर न रहें और योग्य चिकित्सकों को अपने प्रदेश में काम करने के बेहतर अवसर मिलें।

नई सुबह की वास्तविक पहचान

पश्चिम बंगाल के सामने आज अवसर भी हैं और चुनौतियां भी। राजनीतिक परिवर्तन के बाद जनता की अपेक्षाएं स्वाभाविक रूप से बढ़ी हैं। लेकिन लोकतंत्र में सरकार को केवल अपने पूर्ववर्तियों से तुलना करके नहीं, बल्कि अपने वादों और उपलब्धियों के आधार पर परखा जाता है।

सुवेंदु अधिकारी सरकार के लिए यह समय राजनीतिक प्रतिशोध से ऊपर उठकर प्रशासनिक पारदर्शिता, आर्थिक दूरदृष्टि और सामाजिक समरसता का उदाहरण प्रस्तुत करने का है। उद्योगपतियों को विश्वास, किसानों को सम्मान, युवाओं को अवसर, महिलाओं को सुरक्षा, कर्मचारियों को न्याय और गरीबों को सम्मानजनक जीवन मिले, तभी परिवर्तन की अनुभूति समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचेगी।

बंगाल की नई सुबह का अर्थ केवल नई सरकार नहीं, बल्कि नई कार्यसंस्कृति, नई आर्थिक चेतना और नई सामाजिक प्रतिबद्धता होना चाहिए। सत्ता परिवर्तन को व्यवस्था परिवर्तन में बदलना सबसे कठिन, लेकिन सबसे आवश्यक कार्य है। इसके लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति के साथ संवेदनशील प्रशासन, ईमानदार क्रियान्वयन और जनता की सक्रिय भागीदारी जरूरी है।

राष्ट्रकवि की कल्पना का वह भारत, जहां मन भयमुक्त हो और मस्तक ऊंचा रहे, बंगाल के विकास की भी प्रेरणा बन सकता है। बंगाल को फिर से उद्योग, शिक्षा, संस्कृति और मानवीय चेतना का अग्रणी केंद्र बनाना केवल वहां की सरकार का दायित्व नहीं, बल्कि राष्ट्रीय विकास की भी आवश्यकता है।

आखिरकार, किसी प्रदेश की असली समृद्धि उसके बजट के आकार से नहीं, बल्कि उसके नागरिकों के चेहरे पर दिखाई देने वाली मुस्कान से मापी जाती है। बंगाल के सामने एक बार फिर इतिहास रचने का अवसर है। अब देखना यह है कि परिवर्तन की यह दस्तक कितनी दूर तक सुनाई देती है और उम्मीदों के ये दीपक कितने घरों को रोशन कर पाते हैं। क्योंकि बंगाल का उत्थान केवल एक राज्य का विकास नहीं, बल्कि भारत की आर्थिक शक्ति, सांस्कृतिक चेतना और लोकतांत्रिक सामर्थ्य का विस्तार है।

विरासत से व्यापार तक : सिंदूर अनुसंधान एवं नवाचार में अग्रणी भूमिका निभा रहा बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर

सिंदूर का पौधा, जिसका वैज्ञानिक नाम Bixa orellana L. है तथा जिसे सामान्यतः एनाटो और बिहार में सीता सिंदूर के नाम से जाना जाता है, अपने बीजों के चारों ओर पाए जाने वाले लाल-नारंगी प्राकृतिक वर्णक, विशेषकर बिक्सिन, के लिए महत्वपूर्ण है। इसकी वैज्ञानिक, सांस्कृतिक एवं व्यावसायिक संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर द्वारा बीज अंकुरण, पौध प्रवर्धन, जैव रासायनिक गुणों के विश्लेषण, वर्णक उत्पादन तथा प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियों पर व्यवस्थित अनुसंधान किया जा रहा है।





बिहार कृषि विश्वविद्यालय (बीएयू), सबौर के माननीय कुलपति डॉ. डी. आर. सिंह के दूरदर्शी नेतृत्व में विश्वविद्यालय सिंदूर अनुसंधान, प्रौद्योगिकी विकास एवं प्रसार के क्षेत्र में एक अग्रणी संस्थान के रूप में उभरा है। वैज्ञानिक अनुसंधान, सांस्कृतिक विरासत, कृषि उद्यमिता एवं सामुदायिक सशक्तीकरण को एकीकृत करते हुए विभिन्न अभिनव पहलों के माध्यम से विश्वविद्यालय बिहार को प्राकृतिक सिंदूर उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन के राष्ट्रीय केंद्र के रूप में स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

सिंदूर का पौधा, जिसका वैज्ञानिक नाम इळ्ळर ीशश्रश्चरपर ङ. है तथा जिसे सामान्यतः एनाटो और बिहार में सीता सिंदूर के नाम से जाना जाता है, अपने बीजों के चारों ओर पाए जाने वाले लाल-नारंगी प्राकृतिक वर्णक, विशेषकर बिक्सिन, के लिए महत्वपूर्ण है। इसकी वैज्ञानिक, सांस्कृतिक एवं व्यावसायिक संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर द्वारा बीज अंकुरण, पौध प्रवर्धन, जैव रासायनिक गुणों के विश्लेषण, वर्णक उत्पादन तथा प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियों पर व्यवस्थित अनुसंधान किया जा रहा है। विश्वविद्यालय ने सफलतापूर्वक दो महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियाँ विकसित एवं मानकीकृत की हैं-सिंदूर (Bixa orellana) की गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री उत्पादन तकनीक तथा



इसके बीजों से प्राकृतिक सिंदूर पाउडर उत्पादन तकनीक। इन प्रौद्योगिकियों से सिंदूर की खेती, मूल्य संवर्धन एवं ग्रामीण उद्यमिता के नए अवसर सृजित हो रहे हैं।

विश्वविद्यालय की प्रमुख उपलब्धियों में से एक बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर परिसर में लगभग 200 सिंदूर पौधों के साथ भारत के प्रथम सिंदूर पार्क की स्थापना है। इस पहल को विश्वविद्यालय परिसर से आगे बढ़ाते हुए बीएयू ने दानापुर सैन्य छावनी, पटना में प्रथम सिंदूर पार्क की स्थापना के लिए 350 सिंदूर पौधे भी उपलब्ध कराए। यह पहल वैज्ञानिक नवाचार, पर्यावरण संरक्षण एवं राष्ट्रीय गौरव के अनूठे समन्वय का प्रतीक है।

प्रयोगशाला में विकसित तकनीकों को सीधे कृषक समुदाय तक पहुँचाने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय ने भागलपुर जिले के रामासी गाँव को 'सिंदूर ग्राम' के रूप में गोद लिया है, जहाँ 200 सिंदूर पौधे लगाए गए हैं तथा अतिरिक्त 100 पौधों का वितरण ग्रामीण महिलाओं के बीच किया गया है। इस पहल का उद्देश्य सिंदूर की खेती, प्रसंस्करण एवं आजीविका सृजन के लिए एक आदर्श गाँव विकसित करना है। महिला सशक्तीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए विश्वविद्यालय ने अपने प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने वाली महिलाओं को सिंदूर के पौधों का वितरण अनिवार्य किया है, ताकि घरेलू स्तर पर इसकी खेती को प्रोत्साहन मिले तथा भविष्य में उद्यमिता के अवसर विकसित हो सकें।

जन-जागरूकता एवं प्रौद्योगिकी प्रसार विश्वविद्यालय के प्रयासों का महत्वपूर्ण हिस्सा रहे हैं। विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित किसान मेले में सिंदूर का एक विशेष स्टॉल लगाया गया, जहाँ सिंदूर के पौधों, प्राकृतिक वर्णकों, रोपण सामग्री एवं मूल्य संवर्धित उत्पादों का प्रदर्शन



डॉ. डी. आर. सिंह
कुलपति, बिहार कृषि विश्वविद्यालय (बीएयू)





किया गया। इस स्टॉल ने किसानों, महिलाओं, उद्यमियों एवं आम जनता का विशेष ध्यान आकर्षित किया। सिंदूर के सांस्कृतिक एवं आर्थिक महत्व को और अधिक व्यापक रूप से प्रदर्शित करने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय ने 26 जनवरी, 2026 को गणतंत्र दिवस समारोह में 'सिंदूर में अनुसंधान अभियान' (ठशीशरीलह जर्शिीरींळेप ळप ड्ळपर्वी) विषय पर एक विशेष झाँकी प्रस्तुत की। 'विरासत से व्यापार' की प्रेरणादायक थीम पर आधारित इस झाँकी में भारतीय परंपरा के प्रतीक सिंदूर को वैज्ञानिक अनुसंधान एवं नवाचार के माध्यम से व्यावसायिक संभावनाओं वाले उत्पाद के रूप में विकसित करने की यात्रा को प्रभावशाली ढंग से प्रदर्शित किया गया।

क्षेत्रीय पहचान एवं बाजार में उत्पाद की विशिष्ट पहचान को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय ने 'सीता सिंदूर' के भौगोलिक संकेतक (जीआई) पंजीकरण हेतु आवेदन प्रक्रिया में भी महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया है। यह पहल इस पारंपरिक उत्पाद की पहचान को संरक्षित करने तथा इसके प्रचार-प्रसार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।



इसके साथ ही विश्वविद्यालय प्राकृतिक सिंदूर पाउडर के दक्ष एवं मानकीकृत उत्पादन के लिए सिंदूर प्रसंस्करण मशीन विकसित कर रहा है, जिससे यंत्रीकृत प्रसंस्करण एवं ग्राम-स्तरीय उद्यमों की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा।

भविष्य की संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय ने सिंदूर (Bixa orellana) पर उत्कृष्टता केंद्र (Centre of Excellence) की स्थापना हेतु बिहार सरकार को एक महत्वाकांक्षी प्रस्ताव प्रस्तुत किया है। इस केंद्र की परिकल्पना उन्नत अनुसंधान, गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री उत्पादन, प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन, उद्यमिता विकास एवं व्यापक स्तर पर प्रौद्योगिकी प्रसार के लिए एक समर्पित मंच के रूप में की गई है। प्रस्तावित केंद्र से सिंदूर की संपूर्ण मूल्य शृंखला को सुदृढ़ करने तथा वैज्ञानिक नवाचार को किसानों, ग्रामीण महिलाओं, उद्यमियों एवं उद्योगों से जोड़ने में महत्वपूर्ण योगदान मिलने की अपेक्षा है।

सिंदूर पार्कों की स्थापना से लेकर स्वदेशी प्रौद्योगिकियों के विकास, सिंदूर ग्राम को गोद लेने, महिला सशक्तीकरण, जीआई आवेदन में सहयोग तथा उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना की पहल तक, बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर ने अनुसंधान को समाज के लिए ठोस एवं उपयोगी उपलब्धियों में बदलने की अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। माननीय कुलपति डॉ. डी. आर. सिंह के कुशल एवं गतिशील नेतृत्व में विश्वविद्यालय सिंदूर अनुसंधान एवं संवर्धन के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर नए मानदंड स्थापित कर रहा है। 'विरासत से व्यापार' की संकल्पना को साकार करते हुए विश्वविद्यालय बिहार को भारत के उभरते प्राकृतिक सिंदूर क्षेत्र में अग्रणी स्थान दिलाने की दिशा में निरंतर प्रयासरत है।

सिंदूर के फायदे और धार्मिक-सांस्कृतिक महत्व

रक्तचाप और तनाव नियंत्रण : पारंपरिक रूप से माना जाता है कि सिंदूर में मौजूद तत्व और इसे जिस स्थान (मांग) पर लगाया जाता है, वह ब्लड प्रेशर को नियंत्रित रखने और मानसिक तनाव को कम करने में मदद करता है।

एकाग्रता और ऊर्जा : हल्दी और चूने के पारंपरिक मिश्रण से बने सिंदूर को लगाने से मस्तिष्क को शांति मिलती है और एकाग्रता बढ़ती है।

त्वचा का निखार : पुराने पारंपरिक मान्यताओं के अनुसार, इसमें मौजूद धातुएं चेहरे पर जल्दी झुर्रियां नहीं आने देतीं और त्वचा की चमक बनाए रखती हैं।

धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व : हिंदू धर्म में सिंदूर को सुहाग, सौभाग्य और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक माना गया है।

धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व : पति की लंबी उम्र: मान्यता है कि मांग में सिंदूर लगाने से पति की आयु लंबी होती है और उसकी संकटों से रक्षा होती है।

माता सीता और पार्वती का आशीर्वाद: रामायण काल में माता सीता और देवी पार्वती से सिंदूर का गहरा संबंध जुड़ा है। माता पार्वती को प्रसन्न करने और उनका आशीर्वाद पाने के लिए सुहागनें सिंदूर लगाती हैं।

सोलह श्रृंगार का हिस्सा: हिंदू संस्कृति में सिंदूर को स्त्री के 'सोलह श्रृंगार' का सबसे अहम हिस्सा माना जाता है। बिना सिंदूर के विवाह संस्कार पूर्ण नहीं माने जाते।

हनुमान जी से जुड़ाव: हनुमान जी को सिंदूर अत्यंत प्रिय है (चोला चढ़ाया जाता है), जिससे बल, बुद्धि और संकटों से मुक्ति मिलती है।

कई कथाएं हैं दिवाली की

दिवाली मनाने के पीछे सिर्फ एक ही कारण नहीं है, पुराणों में इससे जुड़ी कई कथाएं मिलती हैं। चूंकि हमने बचपन में किताबों में अधिकतर राम जी के लौटने वाली कथा को ही पढ़ा है और घर में भी बड़ों ने हमें यही बताया है इसलिए राम जी के अयोध्या लौटने वाली कथा को हमने दिवाली मनाने की मुख्य वजह मान लिया है। पर वास्तव में दिवाली से जुड़ी और भी कई सारी कथाएं हैं जिनमें दैवीय शक्तियों ने अपने साहस और बल से दुष्ट शक्तियों का संहार किया है। चूंकि दिवाली के दिन कई सारे संयोग ऐसे बनते हैं, जो विश्वास दिलाते हैं कि अंधकार के बाद उजियारा होता ही है इसलिए इसे दीपोत्सव के रुप में मनाया जाता है। दिवाली के दिन देवी लक्ष्मी का पूजन इसलिए किया जाता है क्योंकि इसी दिन उनका प्रकट्योत्सव होता है। पौराणिक ग्रंथों के अनुसार इसी दिन देवी लक्ष्मी केसर सागर से प्रकट हुई थीं। साथ ही कुबेर एवं आरोग्य के देवता धनवंतरि भी इसी दिन समुद्र मंथन से प्रकट हुए थे। इसलिए माता लक्ष्मी की पूजा के साथ ही इनका भी पूजन किया जाता है। कार्तिक मास की चतुर्दशी को श्री कृष्ण ने अत्याचारी राक्षस नरकासुर का वध किया था। इसी कारण दिवाली के एक दिन पूर्व नरक चतुर्दशी मनाई जाती है।विष्णु पुराण के अनुसार, दिपावली के दिन ही भगवान विष्णु ने नरसिंह अवतार धारण करके असुर हिरण्यकश्यप का वध किया था। हिरण्यकश्यप ने बह्माजी की कठोर तपस्या करके वरदान प्राप्त किया था इसलिए उसका संहार करना इतना आसान नहीं था। नरसिंह अवतार में वे सभी गुण थे, जो हिरण्कायकश्यप का वध कर सके। इस दिन प्रजा ने घर में घी के दिपक जलाए थे।



जब पांडवों ने किया था अज्ञातवास पूरा

जब चौसर में पांडव, कौरवों से हार गये थे तो उन्हें बारह वर्ष का वनवास और एक वर्ष का अज्ञातवास मिला था। तेरह वर्ष का कठिन समय व्यतीत करके जिस दिन पांडव वापिस राज्य लौटे थे, उस दिन दिवाली का दिन था। उनके लौटने की खुशी में प्रजावासियों ने दिये जलाकर उनका स्वागत किया था।

काली की कथा

एक समय की बात है, बंगाल के खूबसूरत राज्य में दिवाली नाम का एक खास त्योहार मनाया जाता था। लेकिन बंगाल में दिवाली इसलिए खास थी क्योंकि यह काली नाम की एक शक्तिशाली देवी के बारे में थी। देखिए, बंगाल में दिवाली के दौरान देवी काली शो की स्टार थीं। वह मुख्य देवी थीं जिनकी इस शुभ अवसर पर सभी पूजा करते थे। अब, मैं आपको बताता हूँ कि वह इतनी खास क्यों थीं।

ऐसा माना जाता था कि देवी काली एक दिव्य मकसद से आई थीं। उनका मिशन स्वर्ग और धरती को कुछ बहुत बुरे राक्षसों के क्रूर अत्याचार से आज़ाद कराना था। वह बहुत तेज़ और अजेय थीं। अपनी ज़बरदस्त शक्ति से, उन्होंने एक के बाद एक राक्षसों को हराया।

लेकिन बात यह है - वह इतनी शक्तिशाली और इतनी तेज़ थीं कि दूसरे देवता और अर्ध-देवता भी उनसे थोड़ा डरते थे! अब, यहाँ कहानी एक दिलचस्प मोड़ लेती है। आप भगवान शिव को जानते हैं, है ना? वे अपने शांत स्वभाव के लिए जाने जाते हैं। खैर, वे काली के पति थे, जिसका मतलब है कि वे उनके पति थे। जब काली अपने बेकाबू गुस्से में थीं, तो उन्हें पता भी नहीं चला कि उन्होंने गलती से भगवान शिव पर पैर रख दिया है! उसी पल, कुछ अजीब हुआ। काली को अपनी गलती का एहसास हुआ और उसे अपने किए पर बहुत पछतावा हुआ। उसने तुरंत अपने बुरे काम बंद कर दिए और शांत हो गई। यह खास दिन, जिस दिन काली को अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने उसका पछतावा किया, बंगाल में दिवाली के नाम से जाना जाने लगा। इस कहानी में देवी काली, सबसे बड़ी शक्ति को दिखाती हैं, जो नुकसान पहुंचाने वाली और बुरी ताकतों पर जीत हासिल करके उभरीं। बंगाल में दिवाली एक खूबसूरत याद दिलाती है कि अच्छाई और नेकी हमेशा अंधेरे और बुराई पर जीत हासिल करेगी।



VIDYA MANDIR SOCIETY

In Service of the Nation through Pursuing Excellence in Education



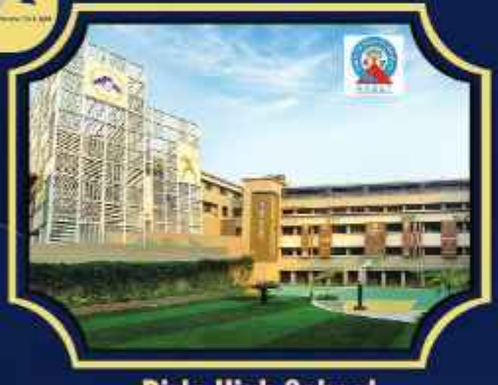
Maj Gen V N Chaturvedi, D. Litt. h.c. (Retd)
SECRETARY GENERAL



Ms. Loveleen Saigal
PRINCIPAL



Ms. Koeli Dey
PRINCIPAL



Birla High School
https://birlahighschool.com/



Sushila Birla Girls' School
https://sbgskolkata.ac.in/



Ms. Jessica Gomes Surana
PRINCIPAL



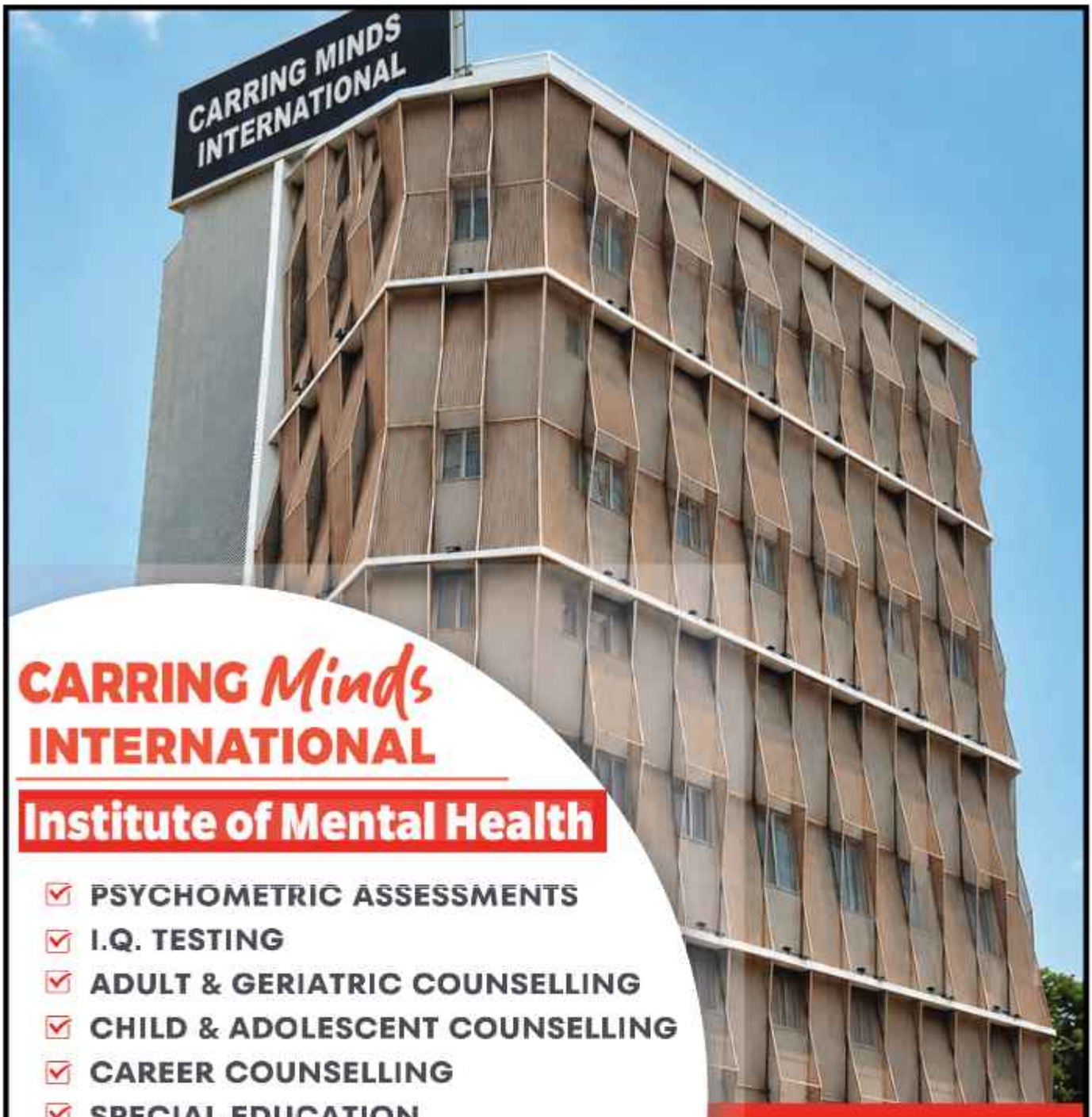
Dr. Saugata Banerjee
DIRECTOR



Birla High School - Mukundapur
https://bhsmukundapur.ac.in/



J.D. Birla Institute
https://www.jdbikolkata.ac.in/



CARRING Minds INTERNATIONAL

Institute of Mental Health

- PSYCHOMETRIC ASSESSMENTS
- I.Q. TESTING
- ADULT & GERIATRIC COUNSELLING
- CHILD & ADOLESCENT COUNSELLING
- CAREER COUNSELLING
- SPECIAL EDUCATION
- REMEDIAL EDUCATION
- OCCUPATIONAL THERAPY
- PHYSIOTHERAPY (CHILD & ADULT)
- HYDROTHERAPY
- HEARING/SPEECH THERAPY
- rTMS THERAPY
- DOCTORS' CONSULTATION

LARGER SPACE
BIGGER VISION

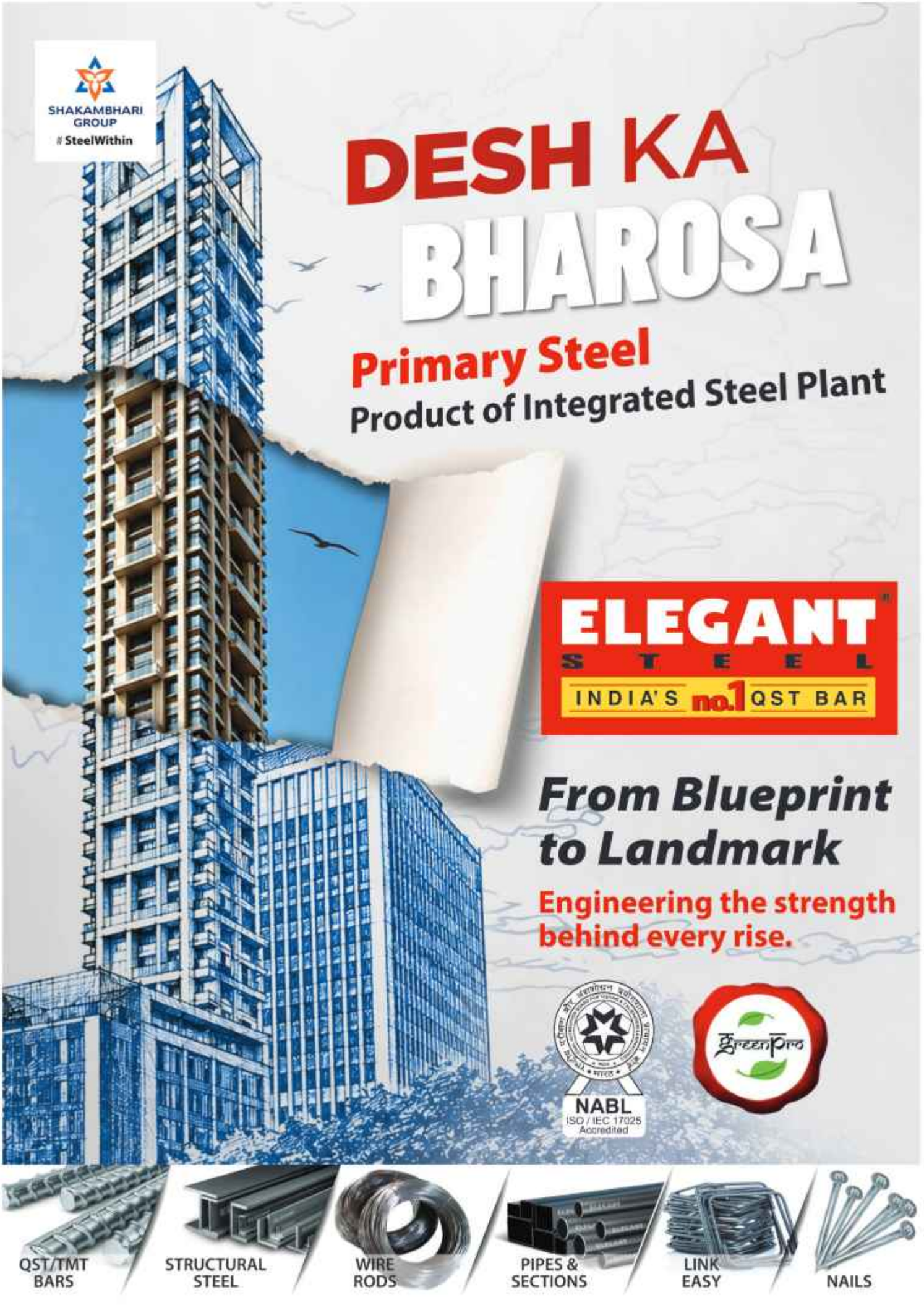
MORE SERVICES

28/8 GARIAHAT ROAD,
KOLKATA - 700029.
(NEAR DHAKURIA BRIDGE)

CALL US +91 79806 16653

TUESDAY TO SATURDAY: 10 AM – 7 PM | SUNDAY: 11 AM – 6 PM

A PATTON GROUP INITIATIVE


SHAKAMBHARI GROUP
#SteelWithin
DESH KA BHAROSA
Primary Steel
Product of Integrated Steel Plant
ELEGANT STEEL
INDIA'S no.1 QST BAR
From Blueprint to Landmark
Engineering the strength behind every rise.
NABL
ISO / IEC 17025
Accredited
GreenPro
QST/TMT BARS
STRUCTURAL STEEL
WIRE RODS
PIPES & SECTIONS
LINK EASY
NAILS

OmDayal Group

CBSE +2

DELHI PUBLIC SCHOOL RUBY PARK, KOLKATA

DELHI PUBLIC SCHOOL DURGAPUR

LEGACY THAT SHAPES TOMORROW.



At DPS Ruby Park, Kolkata, and DPS Durgapur, a rich legacy of academic excellence is complemented by a distinctly future-forward vision. Grounded in strong values and progressive learning, both institutions nurture curiosity, innovation and independent thought, empowering students to excel today and shape the possibilities of tomorrow.

WHY CHOOSE US

- Technology-Enabled & Interactive Classroom Learning
- Advanced Science, Computer & iPad Labs
- Extensive Library & Co-curricular Activities
- Special Classes for JEE, NEET, CUET and Olympiads


AI & Robotics Lab


Astronomy Lab


Smart Classrooms


Multipurpose Court


iPad Lab


Advanced Science Lab


Safe AC Hostel


Bus Facility


Gymnasium


Indoor Sports Complex


Football Ground


Swimming Pool

DPS DURGAPUR EXCLUSIVE

- Fully Air-Conditioned Hostels (V–XII), separate for Boys & Girls with special facilities & nutritious food
- International Standard Football Ground
- GPS-enabled Bus Service from Panagarh to Mejia

SCHOOL	BOARD RESULTS 2026			COMPETITIVE EXAM RESULTS 2026			
	Class X	>90%	Class XII	>90%	JEE Main	JEE Adv	NEET
DPS RUBY PARK	467	329	860	298	126 (Top rank 1014)	41 (Top rank 818)	96 (Top rank 339)
DPS DURGAPUR	207	107	206	54	12	01	07

CLASS X BOARD RESULTS DPS RUBY PARK


99.8% ZAIDA ZAMAN


99.8% AARAV GHOSH

CLASS XII BOARD RESULTS DPS RUBY PARK


98.6% KUSHAGRA GUPTA


98.6% ADITI KUMARI


98.6% ANIRUDH SAXENA

CLASS X BOARD RESULTS DPS DURGAPUR


99.6% SHREYANI MANDAL


99.4% ARYAN DATTA


99.2% SRIJESH DASH

CLASS XII BOARD RESULTS DPS DURGAPUR


97.8% SAHIL DATTA


97.4% ANANDITA MAITRA


96.6% SAFIAH MUKHERJEE

ADMISSIONS OPEN FOR ACADEMIC SESSION 2027 - 28

For Admissions, apply online at
www.dpskolkata.com/admissions
Call (033) 6644 3024/26/30

DELHI PUBLIC SCHOOL RUBY PARK, KOLKATA

254 Shanti Pally, RB Connector,
Kolkata - 700107





For Admissions, apply online at
www.dpsdurgapur.com/admissions
Call +91 95815 00600, 0343 6604402

DELHI PUBLIC SCHOOL DURGAPUR

Plot No. 2D/10, Sector 2D,
Bidhannagar, Durgapur - 713 212